CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/C/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मनुष्य और प्रकृति का गहरा नाता है। हमारा शरीर पाँच प्राकृतिक तत्त्वों से ही बना हुआ है। हमारा परिवेश भी प्रकृति के ही आधार पर बना हुआ है। मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है। विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं। हरे-भरे जंगलों को काटकर, कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं; नहरों, नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक हो गई है। मानव के स्वार्थ ने गंगा जैसी पवित्र नदी तक को नहीं छोड़ा है। कल-कारखानों एवं गाड़ियों द्वारा इतना प्रदूषण उत्सर्जित किया जा रहा है कि कई बार तो सही से साँस लेना भी दुष्कर कार्य प्रतीत होता है।

हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं। प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं, यह पूर्णतया सत्य है; किन्तु क्या हमने प्रकृति को प्राकृतिक रूप में रहने दिया है। मोबाइल, टी.वी. आदि की स्क्रीन पर हमें सारे दृश्य अप्रतिम सुन्दर लगते हैं, किन्तु प्रकृति के साहचर्य में हम नहीं जाना चाहते और जाते भी हैं तो वहाँ भी हम प्रदूषण फैलाने में कोई कमी शेष नहीं छोड़ते। अभिमन्यु की तरह हम तथाकथित विकास के चक्रव्यूह में घुस तो गए हैं, पर उसे पार करने का मार्ग हमें सूझ ही नहीं रहा है। हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते हैं। सारी प्रकृति का दोहन स्वयं ही कर लेना चाहते हैं, ऊपर से झूठा अभिमान यह कि यह सब हम आगामी पीढ़ी का भविष्य रोशन करने के लिए ही कर रहे हैं।

जीवन की सार्थकता इसी में है कि भौतिकता की चाशनी में डूबे यांत्रिक जीवन को छोड़कर वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए और सीमित साधनों के उपयोग से ही जीवन को सुन्दरतम एवं आनन्दित बनाया जाए। इसका प्रारम्भ दूसरों को उपदेश देकर नहीं, अपितु स्वयं से प्रारम्भ करके अनुकरणीय उदाहरण छोड़ा जाए। जब सब ऐसा करने की ओर प्रवृत्त होंगे, तब हमारा परिवेश और जीवन सुन्दरतम एवं मधुरतम हो जाएगा। [10 अंक]

1(i). मनुष्य निरन्तर किसकी ओर अग्रसर रहता है ? [1 अंक]

(A) प्रकृति की ओर

(B) विकास की ओर

(C) विनाश की ओर

(D) धर्म की ओर

सही उत्तर: (B) विकास की ओर

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "मनुष्य सतत विकास की ओर अग्रसर रहता है।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण यहाँ सतत का अर्थ निरंतर है। इसलिए प्रश्न में प्रयुक्त निरन्तर शब्द गद्यांश के इसी वाक्य की ओर संकेत करता है। प्रकृति मनुष्य के जीवन का आधार अवश्य है, पर उसकी निरंतर प्रगति की दिशा के रूप में विकास का नाम आया है। विनाश को लेखक विकास का अनुचित परिणाम मानता है; धर्म की ओर बढ़ने की चर्चा नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : विकास की ओर।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(ii). निम्नलिखित कथन-कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : विकास होना भी चाहिए, लेकिन प्रकृति का विनाश करके नहीं।

कारण (R) : विकास के साथ-साथ प्रकृति को नष्ट होने से भी बचाना होगा। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) कथन (A) की ग़लत व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं।

(C) कथन (A) ग़लत है, लेकिन कारण (R) सही है।

(D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन के अनुसार विकास आवश्यक है, किंतु उसके लिए प्रकृति का विनाश नहीं होना चाहिए। गद्यांश यही संतुलित दृष्टि प्रस्तुत करता है, इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण में विकास के साथ प्रकृति को बचाने की आवश्यकता बताई गई है। लेखक भी जंगलों के विनाश और जल तथा वायु के प्रदूषण की आलोचना करता है, इसलिए कारण सही है।

चरण 3: कथन और कारण का संबंध कथन सही है क्योंकि लेखक प्रगति के साथ प्रकृति की सुरक्षा चाहता है। कारण भी सही है क्योंकि विकास के दौरान प्रकृति को नष्ट होने से बचाना इसी विचार का आवश्यक पक्ष है। कारण बताता है कि कथन में विनाश से बचने की शर्त क्यों रखी गई है। इसीलिए दोनों को गलत बताने वाला विकल्प (B), कथन को गलत मानने वाला विकल्प (C) और कारण को गलत व्याख्या मानने वाला विकल्प (A) असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. नदियों में स्वच्छ जल की मात्रा बढ़ती जा रही है।

II. विकास के नाम पर कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं।

III. हमारे परिवेश और प्राकृतिक परिवेश के आधार भिन्न हैं।

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल I

(B) केवल II

(C) केवल III

(D) I, II एवं III सभी

सही उत्तर: (B) केवल II

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "हरे-भरे जंगलों को काटकर, कंक्रीट के जंगल खड़े किए जा रहे हैं।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण कथन II गद्यांश के इस तथ्य से मेल खाता है। कथन I गलत है, क्योंकि लेखक नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक होने की बात कहता है। कथन III भी गलत है। गद्यांश के आरंभ में स्पष्ट है कि हमारा परिवेश प्रकृति के ही आधार पर बना है। इसलिए केवल I, केवल III तथा तीनों कथनों को सही मानने वाले विकल्प स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : केवल II।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(iv). मनुष्य सारी खुशियाँ कहाँ तलाश रहा है ? [1 अंक]

(A) प्राकृतिक परिवेश में

(B) धार्मिक परिवेश में

(C) हरे-भरे वनों में

(D) भौतिक साधनों में

सही उत्तर: (D) भौतिक साधनों में

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "हम सारी खुशियाँ भौतिक साधनों या यंत्रों में तलाश रहे हैं।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण प्रश्न में सारी खुशियाँ शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये शब्द गद्यांश में सीधे भौतिक साधनों और यंत्रों से जुड़े हैं। इसलिए उत्तर इसी वाक्य से निश्चित होता है। प्राकृतिक परिवेश और हरे-भरे वन आनंद के स्रोत हो सकते हैं, लेकिन प्रश्न मनुष्य की वर्तमान खोज के विषय में है। धार्मिक परिवेश में खुशियाँ खोजने का उल्लेख नहीं है। अतः विकल्प (A), (B) और (C) इस प्रश्न का उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : भौतिक साधनों में।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(ix). जीवन को सुन्दरतम बनाने के लिए मनुष्य को निम्नलिखित में से कौन-से कदम उठाए जाने की जरूरत है ? [1 अंक]

(A) साधनों का अधिकाधिक उपयोग करना

(B) दूसरों को अधिकाधिक उपदेश देना

(C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

(D) भौतिकता की चाशनी का आनन्द उठाना

सही उत्तर: (C) न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "सीमित साधनों के उपयोग से ही जीवन को सुन्दरतम एवं आनन्दित बनाया जाए।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण लेखक आगे कहता है कि इसका प्रारम्भ दूसरों को उपदेश देकर नहीं, स्वयं से करके अनुकरणीय उदाहरण छोड़ना चाहिए। इसलिए साधनों का संयमित उपयोग अपने आचरण में दिखाना अपेक्षित कदम है। अधिकाधिक साधन उपयोग करना और भौतिकता में डूबना लेखक के सुझाव के विपरीत हैं। केवल दूसरों को उपदेश देना भी स्पष्ट रूप से निषिद्ध है। इस प्रकार विकल्प (A), (B) और (D) गद्यांश के संदेश से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : न्यूनतम साधन निर्भरता का स्व-उदाहरण प्रस्तुत करना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(v). मनुष्य का मन क्या देखकर आनन्द का अनुभव करता है ? [1 अंक]

(A) नए-नए चलचित्र

(B) प्राकृतिक दृश्य

(C) कंक्रीट के जंगल

(D) मोबाइल स्क्रीन पर आने वाले संदेश

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक दृश्य

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "प्राकृतिक दृश्यों से हम आज भी आनन्दित होते हैं, यह पूर्णतया सत्य है।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण यह वाक्य मनुष्य के आनंद और प्राकृतिक दृश्यों के बीच सीधा संबंध स्थापित करता है। प्रश्न में देखने से प्राप्त आनंद पूछा गया है, इसलिए यही निर्णायक प्रमाण है। नए चलचित्र और मोबाइल संदेश भौतिक या यांत्रिक माध्यमों से संबंधित हैं; उन्हें इस आनंद का उत्तर नहीं बताया गया है। कंक्रीट के जंगल प्रकृति के विनाश के उदाहरण हैं। अतः विकल्प (A), (C) और (D) अनुपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : प्राकृतिक दृश्य।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(vi). मनुष्य और प्रकृति के संबंध के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) मनुष्य लगातार प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है।

(B) मनुष्य प्रकृति के साहचर्य में नहीं जाना चाहता।

(C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

(D) मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है।

सही उत्तर: (C) प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "नहरों, नदियों में स्वच्छ जल की अपेक्षा दूषित पानी की मात्रा अधिक हो गई है।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण गद्यांश में कारखानों और गाड़ियों से वायु प्रदूषण बढ़ने का भी उल्लेख है। ये तथ्य प्रदूषण रहित परिवेश वाले कथन का खंडन करते हैं। प्रश्न असत्य कथन पूछता है, इसलिए इसी कथन को चुनना है। प्रकृति से छेड़छाड़, प्रकृति के साहचर्य से दूरी और यांत्रिक जीवन की प्रवृत्ति तीनों गद्यांश में वर्णित हैं। इसलिए विकल्प (A), (B) और (D) सत्य कथन हैं तथा असत्य कथन के उत्तर के रूप में नहीं चुने जा सकते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : प्राकृतिक परिवेश को मनुष्य ने प्रदूषण रहित रखा है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(vii). विकास के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ करके आगामी पीढ़ी के लिए मनुष्य क्या कर रहा है ? गद्यांश के आधार पर लिखिए। [1 अंक]

(A) उसका भविष्य सँवार रहा है।

(B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

(C) उसका भविष्य रोशन कर रहा है।

(D) उसके भविष्य के लिए व्यापक तैयारी कर रहा है।

सही उत्तर: (B) उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "हम आगामी पीढ़ियों का भविष्य अंधकारमय करने की कोई कमी शेष नहीं छोड़ना चाहते हैं।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण प्रकृति का अनियंत्रित दोहन भावी पीढ़ियों के लिए संसाधन और स्वच्छ परिवेश घटाता है। गद्यांश का अंधकारमय शब्द विकल्प में दिए गए धूमिल शब्द का आशय स्पष्ट करता है। भविष्य सँवारना, रोशन करना या उसके लिए व्यापक तैयारी करना यहाँ मनुष्य के झूठे अभिमान से जुड़ी धारणाएँ हैं। लेखक वास्तविक परिणाम की आलोचना करता है। अतः विकल्प (A), (C) और (D) उसके अभिप्राय को उलट देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : उसका भविष्य धूमिल कर रहा है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(viii). मनुष्य जीवन की सार्थकता किसमें है ? [1 अंक]

(A) यांत्रिक जीवन में

(B) प्राकृतिक जीवन में

(C) नगरीय जीवन में

(D) ग्रामीण जीवन में

सही उत्तर: (B) प्राकृतिक जीवन में

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश से प्रत्यक्ष प्रमाण लेकर उत्तर चुनना चाहिए।
- प्रश्न के मुख्य शब्द और लेखक के आशय में सामंजस्य होना आवश्यक है।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण गद्यांश में कहा गया है, "वास्तविक प्राकृतिक जीवन की शरण में जाया जाए।" यह अंश प्रश्न के उत्तर का प्रत्यक्ष आधार है।

चरण 2: अर्थ और विकल्पों का परीक्षण अंतिम अनुच्छेद में लेखक जीवन की सार्थकता को भौतिकता में डूबे यांत्रिक जीवन से बाहर आने और सीमित साधनों के उपयोग से जोड़ता है। इसलिए प्राकृतिक जीवन ही उसका स्पष्ट उत्तर है। यांत्रिक जीवन को छोड़ने का सुझाव दिया गया है, इसलिए विकल्प (A) विपरीत है। नगरीय और ग्रामीण जीवन स्थान आधारित श्रेणियाँ हैं; लेखक ने इनमें से किसी को सार्थकता का निर्णायक आधार नहीं बनाया। अतः विकल्प (C) और (D) भी असंगत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : प्राकृतिक जीवन में।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश के संबंधित वाक्य से मिलाएँ और फिर अन्य विकल्पों का अर्थ जाँचें।

1(x). उपर्युक्त गद्यांश में लेखक की चिंता का विषय है : [1 अंक]

(A) मनुष्य की भौतिक साधनों पर बढ़ती निर्भरता

(B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

(C) मनुष्य का प्रकृति से विमुख होना

(D) मनुष्य का स्क्रीन पर समय बिताना

सही उत्तर: (B) मनुष्य और प्रकृति के बीच का बढ़ता असंतुलन

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पहचानने के लिए पूरे गद्यांश की चिंता को समझना चाहिए, केवल किसी एक उदाहरण को नहीं।
- यहाँ विकास, प्रदूषण और भावी पीढ़ी का संकट मनुष्य तथा प्रकृति के असंतुलित संबंध से जुड़े हैं।

चरण 1: लेखक की मुख्य चिंता पहचानें लेखक विकास का विरोध नहीं करता; वह प्रकृति का विनाश करके किए जा रहे विकास का विरोध करता है। जंगलों का कटना, नदियों का प्रदूषण और दूषित वायु उसी असंतुलन के उदाहरण हैं। समाधान के रूप में वह सीमित साधनों के उपयोग और प्राकृतिक जीवन की ओर लौटने को कहता है।

चरण 2: विकल्पों को परखें (B) इस पूरी चिंता को समेटता है। (A) में भौतिक साधनों पर निर्भरता एक कारण है, पूरी समस्या नहीं। (C) में प्रकृति से विमुख होना इसी संकट का एक पक्ष है। (D) में स्क्रीन पर समय बिताना केवल एक उदाहरण है, जबकि लेखक पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को लेकर चिंतित है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक की चिंता मनुष्य और प्रकृति के बीच बढ़ता असंतुलन है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव वाले प्रश्न में वह विकल्प चुनें जो गद्यांश के उदाहरणों और समाधान, दोनों को समेटता हो।

2(a). मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण मन हुआ जाता है,
कि जगत स्वायत्त हुआ जाता है। [5 अंक]

2(a)(i). 'मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है' पंक्ति में 'महाकाव्य पीड़ा' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) प्रत्येक व्यक्ति के मन में महाकाव्य की तरह असीम पीड़ा लिखी है।
(B) प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महाकाव्य की तरह असीम अनुभव छिपे हैं।
(C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।
(D) प्रत्येक व्यक्ति के मन में पीड़ा तो है, किन्तु सब पर महाकाव्य की रचना नहीं हो सकती है।

सही उत्तर: (C) प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में असीम पीड़ादायक अनुभव है, जिन पर महाकाव्य की रचना हो सकती है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य में प्रयुक्त पद का अर्थ उसके प्रसंग और आसपास की पंक्तियों से निकलता है।
- 'महाकाव्य पीड़ा' मनुष्य के अंतर्मन में संचित व्यापक दुख और पीड़ादायक अनुभवों की गहराई को व्यक्त करती है।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझें कवि को प्रत्येक वाणी में ऐसी गहरी पीड़ा सुनाई देती है जिसके विस्तार पर महाकाव्य रचा जा सकता है। वह दूसरों के अंतर में छिपे दुख को पहचानता है। यहाँ महाकाव्य का उल्लेख उस पीड़ा की गहराई और व्यापकता का बोध कराता है।

चरण 2: सभी विकल्पों की जाँच करें (C) अंतर्मन के असीम पीड़ादायक अनुभवों और उन पर महाकाव्य रचना की संभावना, दोनों को स्पष्ट करता है। (A) पीड़ा को महाकाव्य की तरह लिखी हुई बताता है। (B) सामान्य अनुभवों की बात करता है और पीड़ा का विशेष भाव छोड़ देता है। (D) रचना की संभावना को नकारता है, जिसका संकेत पंक्ति में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन में ऐसे असीम पीड़ादायक अनुभव हैं जिन पर महाकाव्य लिखा जा सकता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रूपकात्मक शब्द का अर्थ चुनते समय उसके मूल भाव को बनाए रखें; यहाँ अनुभवों के साथ पीड़ा का होना आवश्यक है।

2(a)(ii). 'पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ' पंक्ति का क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) कवि सबके नज़दीक रहना चाहता है।

(B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

(C) कवि सबके अनुभवों का लाभ उठाना चाहता है।

(D) कवि सभी रास्तों से गुज़रना चाहता है।

सही उत्तर: (B) कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है।

हल:

अवधारणा:

- कविता में दूसरों के भीतर से गुजरना उनके अनुभवों और संवेदनाओं से आत्मीय रूप में जुड़ना है।
- पूर्ववर्ती पंक्ति की पीड़ा और आगे का आत्मसमर्पण इस कथन को दूसरों के दुख की अनुभूति से जोड़ते हैं।

चरण 1: भावगत संदर्भ देखें कवि हर व्यक्ति की वाणी में पीड़ा अनुभव करता है और उसके अंतर्मन को जानना चाहता है। 'सबमें से गुज़रना' शारीरिक यात्रा नहीं, दूसरों की स्थितियों में स्वयं को रखकर उनके जीवन की पीड़ा अनुभव करने की आकांक्षा है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर करें (B) इसी संवेदनशील सहभागिता को व्यक्त करता है। (A) केवल निकट रहने की बात करता है, पीड़ा अनुभव करने की नहीं। (C) दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने की स्वार्थपूर्ण भावना जोड़ता है, जबकि कवि स्वयं को दे रहा है। (D) इसे रास्तों पर चलने का शाब्दिक अर्थ देता है, जो प्रसंग के अनुकूल नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सबके जीवन की पीड़ा का अनुभव करना चाहता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पंक्ति का अर्थ तय करने से पहले उसके ठीक पहले और बाद की पंक्तियाँ पढ़ें; वे भावात्मक अर्थ स्पष्ट करती हैं।

2(a)(iii). जो दूसरों के दुख को अपना दुख मानकर चलते हैं, समाज उनके बारे में क्या सोचता है ? [1 अंक]

(A) उन्हें समझदार समझता है।

(B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

(C) उनके बारे में सोचता ही नहीं है।

(D) उन्हें चालाक समझता है।

सही उत्तर: (B) उन्हें बेवकूफ समझता है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित कविता के उत्तर में उसी कविता के शब्द निर्णायक प्रमाण होते हैं।
- कवि की आत्मीय संवेदना और समाज की व्यावहारिक दृष्टि के अंतर से कथन का आशय स्पष्ट होता है।

चरण 1: कविता से प्रमाण लें कवि दूसरों की पीड़ा को अनुभव करना चाहता है और स्वयं को सबके लिए समर्पित करता है। इसी संदर्भ में वह 'बेवकूफ बनने की खातिर' और अपने भीतर 'प्रसन्नचित्त एक मूर्ख' होने की बात कहता है। इससे स्पष्ट है कि ऐसी निःस्वार्थ संवेदनशीलता को समाज मूर्खता मानता है।

चरण 2: विकल्पों का निर्णय करें (B) कविता के 'बेवकूफ' शब्द से सीधे पुष्ट होता है। (A) का समझदार तथा (D) का चालाक होना इस सामाजिक दृष्टि के विपरीत है। (C) समाज की उदासीनता बताता है, जबकि प्रश्न ऐसे व्यक्तियों के प्रति समाज की धारणा पूछता है और कविता में उस धारणा का संकेत उपस्थित है।

चरण 3: निष्कर्ष जो दूसरों के दुख को अपना दुख मानते हैं, समाज उन्हें बेवकूफ समझता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: समाज की धारणा पूछे जाने पर अपनी नैतिक राय जोड़ने के स्थान पर पद्यांश में प्रयुक्त मूल्यांकनसूचक शब्द देखें।

2(a)(iv). जब लोग कवि को भावनात्मक रूप से ठगते हैं तो कवि को कैसा महसूस होता है ? [1 अंक]

(A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

(B) कवि को असीम दुख की प्राप्ति होती है।

(C) कवि की भावनाओं को ठेस पहुँचती है।

(D) कवि के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सही उत्तर: (A) कवि को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें कवि स्पष्ट कहता है कि "बड़ा मज़ा आता है कि मैं ठगा जाता हूँ। अपने हृदय में "प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा होने का कथन भी उसकी प्रसन्नता को पुष्ट करता है। इसलिए भावनात्मक रूप से ठगे जाने पर उसकी प्रमुख प्रतिक्रिया आनंद है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें असीम आनंद वाला विकल्प कवि के इस विरोधाभासी अनुभव को व्यक्त करता है। असीम दुख या भावनाओं को ठेस पहुँचने के विकल्प सामान्य व्यक्ति की प्रतिक्रिया हो सकते हैं, पर यहाँ कवि के कथन के विरुद्ध हैं। कोई प्रभाव न पड़ना भी गलत है, क्योंकि उसके भीतर प्रसन्नता और आत्मीयता बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि को असीम आनंद की प्राप्ति होती है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: ठगे जाने पर प्रतिक्रिया पूछी जाए तो "बड़ा मज़ा आता है" को आधार बनाएँ; सामान्य दुख की प्रतिक्रिया यहाँ न चुनें।

2(a)(v). उपर्युक्त काव्यांश के आधार पर कवि के विषय में पता चलता है कि वह : [1 अंक]

(A) भावुकता से परिपूर्ण है।

(B) विनम्रता से परिपूर्ण है।

(C) व्यावहारिकता से परिपूर्ण है।

(D) कोमलता से परिपूर्ण है।

सही उत्तर: (A) भावुकता से परिपूर्ण है।

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें कवि प्रत्येक व्यक्ति की वाणी में महाकाव्य जैसी पीड़ा महसूस करता है। वह सबकी पीड़ा से होकर गुजरना चाहता है और दूसरों के दुख को अपना दुख समझता है। ये कथन उसके भीतर भावनाओं की प्रबलता और सहानुभूति का प्रमाण हैं।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें भावुकता से परिपूर्ण होना इन सभी अनुभवों को समेटता है। विनम्रता मुख्य विषय नहीं है, क्योंकि कविता में आत्मीय संवेदना का वर्णन है। व्यावहारिकता अपने लाभ की सावधानी सुझाती है, जबकि कवि ठगे जाने पर भी प्रसन्न है। कोमलता निकट भाव है, लेकिन भावुकता उसके व्यापक संवेदनात्मक स्वभाव का अधिक सटीक परिचय है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि भावुकता से परिपूर्ण है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कवि के स्वभाव के लिए सबकी पीड़ा अनुभव करने और ठगे जाने पर भी प्रसन्न रहने की प्रवृत्ति साथ देखें।

अथवा

2(b). बरसती साँझ है
स्थगित मेघों ने डाल दिया है
आसमान में डेरा
पहले गरजे भयंकर
चिंघाड़ उठे हों
हाथियों के झुंड जैसे क्षितिज में
लंबे सफेद दाँतों-सी कड़कदार बिजली
काली विशाल देह
धूमिल अँधेरे का विस्तार
ऋतु चक्र में परिवर्तन की इस बेला में
सावन के आवारा मेघ
भटकते हुए आए हैं
पृथ्वी का पता पूछते
बरसो हे मेघ
जल्दी बरसकर खाली करो
शरद के लिए आसमानी सिंहासन
कि शरद अब आता होगा
आती होगी उसकी टपकाती देह
भरी-भरी हरी पृथ्वी
अब ठंडी चाँदनी से नहाएगी
धान को अभी पकना है
सुनहरा होना है
किसानों के बैरी न बनो मेघ
बरसो, बरसकर खाली करो गगन
हे अक्टूबर के अनाहूत मेघ ! [5 अंक]

2(b)(i). उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने आसमान में गरजते बादलों की तुलना किससे की है ? [1 अंक]

(A) लंबे सफेद दाँतों से
(B) हाथियों के झुंड से
(C) काली विशाल देह से
(D) धूमिल अँधेरे से

सही उत्तर: (B) हाथियों के झुंड से

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें काव्यांश में बादलों के भयंकर गर्जन का वर्णन करते समय कहा गया है कि वे ऐसे गरजे मानो क्षितिज में हाथियों के झुंड चिंघाड़ उठे हों। यहाँ बादलों की ध्वनि को हाथियों की चिंघाड़ से जोड़ा गया है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें हाथियों के झुंड वाला विकल्प इस तुलना को सीधे व्यक्त करता है। लंबे सफेद दाँतों की तुलना कड़कदार बिजली से है, इसलिए वह गर्जन का उत्तर नहीं है। काली विशाल देह और धूमिल अँधेरा बादलों के रूप तथा उनके फैलाव का वर्णन करते हैं, उनकी गर्जना का उपमान नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष गरजते बादलों की तुलना हाथियों के झुंड से की गई है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: गरजने की ध्वनि का उपमान हाथियों का झुंड है; सफेद दाँतों वाली उपमा बिजली के लिए अलग आई है।

2(b)(ii). 'सावन के आवारा मेघ आसमान में कब आए हैं ?' इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित कथनों को पढ़कर उचित विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन :

I. सावन मास के प्रारंभ होने पर

II. सावन मास के अंत होने पर

III. वर्षा ऋतु की समाप्ति और शरद ऋतु के प्रारंभ होने पर

IV. ऋतु-चक्र में परिवर्तन की संधि-बेला पर

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल IV

(B) I और II

(C) III और IV

(D) II, III और IV

सही उत्तर: (C) III और IV

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें कवि इन मेघों को अक्टूबर के अनाहूत मेघ कहता है। वह शरद के आने की प्रतीक्षा करता हुआ बादलों से आकाश खाली करने को कहता है। ऋतु चक्र में परिवर्तन की बेला का स्पष्ट उल्लेख बताता है कि वर्षा से शरद की ओर संक्रमण हो रहा है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें कथन III वर्षा की समाप्ति और शरद के प्रारंभ का संकेत देता है तथा कथन IV इसी परिवर्तन की संधि-बेला बताता है। दोनों सही हैं। कथन I में सावन का आरंभ और कथन II में सावन का अंत कहा गया है; कविता का अक्टूबर तथा शरद संबंधी संकेत इनमें सीमित नहीं होता। इसलिए II को शामिल करने वाला विकल्प भी अनुचित है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन III और IV सही हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: समय तय करने के लिए "अक्टूबर" और "शरद अब आता होगा" साथ पढ़ें; केवल सावन शब्द पर न रुकें।

2(b)(iii). 'जल्दी बरसकर खाली करो

शरद के लिए आसमानी सिंहासन' — इन काव्य-पंक्तियों में 'आसमानी सिंहासन' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) आसमानी रंग का सिंहासन

(B) आसमान के समान सिंहासन

(C) आसमान रूपी सिंहासन

(D) आसमान से बना सिंहासन

सही उत्तर: (C) आसमान रूपी सिंहासन

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें आकाश पर अभी वर्षा के बादलों का अधिकार है। कवि चाहता है कि वे बरसकर हट जाएँ, जिससे शरद का आगमन हो सके। इस प्रसंग में आसमान को ऐसी राजगद्दी माना गया है जिस पर अगली ऋतु अपना अधिकार स्थापित करेगी।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें आसमानी सिंहासन का अर्थ आसमान रूपी सिंहासन है। यह रूपकात्मक अभिव्यक्ति है। आसमानी रंग का सिंहासन रंग का अर्थ देता है और आसमान से बना सिंहासन निर्माण सामग्री का, इसलिए दोनों अनुपयुक्त हैं। आसमान के समान सिंहासन में केवल समानता का भाव है, जबकि यहाँ आसमान को ही सिंहासन कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष आसमानी सिंहासन का अभिप्राय आसमान रूपी सिंहासन है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: आसमानी सिंहासन में आसमान को ही सिंहासन माना गया है; "रूपी" और "के समान" का अंतर पहचानें।

2(b)(iv). 'आती होगी उसकी टपकाती देह' – काव्य-पंक्ति के संदर्भ में लिखिए की शरद की देह क्या टपकाती आएगी ? [1 अंक]

(A) ठंडी चाँदनी

(B) बारिश की बूँदें

(C) ओस की बूँदें

(D) चाँदनी-सी ओस

सही उत्तर: (C) ओस की बूँदें

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें शरद की टपकाती देह का वर्णन वर्षा के बाद आने वाली ऋतु की नमी और ओस की ओर संकेत करता है। अगली पंक्तियों में पृथ्वी के ठंडी चाँदनी से नहाने का अलग उल्लेख है। इससे ओस और चाँदनी की भूमिकाएँ अलग समझी जा सकती हैं।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें ओस की बूँदें शरद की देह से टपकने वाली वस्तु का सटीक अर्थ हैं। बारिश की बूँदें विदा होते मेघों से संबंधित हैं। ठंडी चाँदनी पृथ्वी को नहलाती है, उसे यहाँ टपकने वाला पदार्थ नहीं कहा गया। चाँदनी-सी ओस में एक अतिरिक्त तुलना जोड़ दी गई है, जो पूछी गई पंक्ति में नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शरद की देह ओस की बूँदें टपकाती आएगी। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: टपकाती देह को ओस से जोड़ें; पृथ्वी को नहलाने वाली ठंडी चाँदनी अगली पंक्ति का अलग बिंब है।

2(b)(v). कवि सावन के बादलों से आकाश खाली करने के लिए क्यों कह रहा है ? [1 अंक]

(A) लगातार होने वाली बारिश से थकने के कारण

(B) बादलों को अनिमंत्रित अतिथि मानने के कारण

(C) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए

(D) खेतों में खड़ी फ़सल के पकने के लिए

सही उत्तर: (C) शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- अपठित काव्यांश का उत्तर उसकी पंक्तियों, प्रसंग और मुख्य भाव के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- विकल्प चुनते समय निकट लगने वाले अर्थ और पंक्ति के सटीक अर्थ में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश में निर्णायक संकेत पहचानें कवि बादलों से कहता है कि वे जल्दी बरसकर शरद के लिए आसमानी सिंहासन खाली करें। वह बताता है कि शरद आने वाला है और पृथ्वी ठंडी चाँदनी से नहाएगी। ये कथन नई ऋतु के स्वागत की इच्छा को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करना पूरे आग्रह का मुख्य उद्देश्य है। लगातार बारिश से थकने की निजी शिकायत नहीं है। अनाहूत संबोधन बादलों के असमय आने का संकेत है, मुख्य उद्देश्य नहीं। धान के पकने की चिंता भी आगे आती है, किंतु आसमान खाली करने के सीधे आग्रह का घोषित कारण शरद को स्थान देना है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि शरद ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए आकाश खाली करने को कह रहा है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: आकाश खाली करने के सीधे आग्रह के साथ “शरद के लिए” पढ़ें; इससे स्वागत का घोषित उद्देश्य मिलता है।

3(i). निम्नलिखित में से समाचार-पत्र की आवाज़ किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) स्तंभ लेख

(B) फ़ीचर

(C) विशेष लेख

(D) संपादकीय

सही उत्तर: (D) संपादकीय

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र की संस्थागत राय का प्रतिनिधित्व करता है। किसी महत्त्वपूर्ण घटना, नीति या सामाजिक प्रश्न पर पत्र का अपना दृष्टिकोण इसी में व्यक्त होता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: समाचार-पत्र की आवाज़ का अर्थ यहाँ आवाज़ का आशय किसी एक लेखक की निजी अभिव्यक्ति से नहीं, बल्कि समाचार-पत्र की विचारधारा और नीति से है। संपादकीय के माध्यम से पाठक किसी विषय पर पत्र का आधिकारिक मत जानता है।

चरण 2: अन्य विधाओं से अंतर स्तंभ लेख प्रायः स्तंभकार का निजी दृष्टिकोण देता है। फ़ीचर किसी विषय का रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण है तथा विशेष लेख विशिष्ट विषय का विस्तार करता है। ये तीनों अपने-आप समाचार-पत्र का संस्थागत मत नहीं बन जाते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : संपादकीय।

त्वरित सुझाव: पत्र की अपनी राय पूछी जाए तो संपादकीय चुनें; लेखक की निजी राय और पत्र की राय का अंतर पहचानें।

3(ii). पत्रकारीय लेखन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कच्चा माल किससे प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) संपादकीय से

(B) फ़ीचर से

(C) साक्षात्कार से

(D) स्तंभ लेख से

सही उत्तर: (C) साक्षात्कार से

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन के लिए तथ्य, अनुभव, विचार और प्रत्यक्ष सूचनाएँ आधारभूत सामग्री हैं। साक्षात्कार संबंधित व्यक्ति से प्रश्न पूछकर यह सामग्री जुटाने की विधि है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: कच्चे माल का आशय कच्चा माल वह मूल जानकारी है जिससे समाचार, विशेष लेख या दूसरी पत्रकारिता सामग्री तैयार की जाती है। साक्षात्कार में व्यक्ति के अनुभव, कथन और किसी घटना की जानकारी प्रत्यक्ष रूप से मिलती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण संपादकीय तैयार विचारप्रधान लेख है। फ़ीचर किसी विषय का विकसित प्रस्तुतीकरण है और स्तंभ लेख नियमित वैचारिक रचना है। प्रश्न सूचना जुटाने के स्रोत की पहचान कराता है; इसलिए इन तैयार लेखन रूपों के स्थान पर साक्षात्कार उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : साक्षात्कार से।

त्वरित सुझाव: कच्चा माल पूछे जाने पर जानकारी जुटाने की प्रक्रिया पहचानें; तैयार लेख और सूचना के स्रोत को अलग रखें।

3(iii). रेडियो समाचार की भाषा शैली किस प्रकार की होनी चाहिए ? [1 अंक]

(A) मुहावरेदार आम बोलचाल की भाषा

(B) समाचार वाचक के लिए सहज पठनीय भाषा

(C) तत्सम शब्द प्रधान भाषा

(D) आम बोलचाल की भाषा

सही उत्तर: (D) आम बोलचाल की भाषा

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है। श्रोता प्रसारित समाचार को सामान्यतः एक बार सुनता है, इसलिए समाचार की भाषा सरल, स्पष्ट और आम बोलचाल की होनी चाहिए।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: श्रोता की आवश्यकता रेडियो समाचार सुनते समय पाठक की तरह किसी कठिन वाक्य को दोबारा पढ़ने की सुविधा नहीं होती। प्रचलित शब्दों और छोटे, सीधे वाक्यों वाली आम बोलचाल की भाषा समाचार तुरंत समझने में सहायता करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा मुहावरेदार भाषा अर्थ को घुमा सकती है, इसलिए केवल बोलचाल की भाषा के साथ मुहावरेदारी जोड़ना आवश्यक नहीं। वाचक के लिए सहज पठनीय होना उपयोगी है, पर श्रोता की समझ का पूरा मानदंड नहीं। तत्सम शब्दों की प्रधानता भाषा कठिन कर सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : आम बोलचाल की भाषा।

त्वरित सुझाव: रेडियो के प्रश्न में श्रोता की एक बार सुनकर समझने की क्षमता को भाषा चुनने का आधार बनाएँ।

3(iv). समाचार लेखन के ककारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए :

I. क्या, कौन, कब और कहाँ ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं।

II. क्यों और कैसे विश्लेषणात्मक पहलू पर बल देते हैं।

III. क्या और कब विश्लेषणात्मक पहलू पर बल देते हैं।

ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) I और II

(D) केवल III

सही उत्तर: (C) I और II

हल:

अवधारणा:

- समाचार के छह ककार क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे हैं। पहले चार मूल तथ्य बताते हैं, जबकि अंतिम दो कारण और प्रक्रिया का विवेचन करते हैं।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: कथन I और II की जाँच क्या से घटना, कौन से संबंधित व्यक्ति, कब से समय और कहाँ से स्थान का पता चलता है; अतः कथन I सही है। क्यों कारण और कैसे घटना की प्रक्रिया समझाता है। ये विश्लेषणात्मक पक्ष हैं, इसलिए कथन II भी सही है।

चरण 2: कथन III की जाँच क्या और कब क्रमशः घटना तथा समय बताते हैं। ये अपने-आप कारण या प्रक्रिया का विश्लेषण नहीं करते। इसलिए इन्हें विश्लेषणात्मक बताने वाला कथन III गलत है। जिन विकल्पों में III शामिल है, वे स्वीकार्य नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : I और II।

त्वरित सुझाव: क्या-कौन-कब-कहाँ को तथ्य और क्यों-कैसे को विश्लेषण के समूह में रखकर कथन जाँचें।

3(v). कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए :

	कॉलम 'क'		कॉलम 'ख'
A.	मुद्रित माध्यम	I.	मौसम
B.	फ़ीचर	II.	डेडलाइन
C.	टेलीविज़न	III.	250 – 2000 शब्द-सीमा
D.	आर्द्रता	IV.	एक रेखीय माध्यम

[1 अंक]

(A) A-IV, B-I, C-II, D-III

(B) A-II, B-III, C-IV, D-I

(C) A-III, B-IV, C-I, D-II

(D) A-I, B-III, C-II, D-IV

सही उत्तर: (B) A-II, B-III, C-IV, D-I

हल:

अवधारणा:

- मिलान करते समय प्रत्येक माध्यम अथवा लेखन रूप की विशिष्ट पहचान देखनी चाहिए। डेडलाइन समय-सीमा, फ़ीचर विस्तृत लेखन और आर्द्रता मौसम से संबंधित है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: चारों पदों का मिलान मुद्रित माध्यम में सामग्री प्रकाशन के निश्चित समय तक तैयार होती है, इसलिए A-II है। फ़ीचर की दी गई 250–2000 शब्द-सीमा से B-III बनता है। टेलीविज़न का प्रसारण तय क्रम से आगे बढ़ता है, इसलिए C-IV है। आर्द्रता मौसम का तत्त्व है, इसलिए D-I है।

चरण 2: दिए गए संयोजनों की जाँच इन चार संबंधों को एक साथ सही क्रम में केवल विकल्प (B) रखता है। विकल्प (A) फ़ीचर को मौसम से जोड़ता है; (C) टेलीविज़न को मौसम से जोड़ता है; और (D) आर्द्रता को एक रेखीय माध्यम बताता है। इसलिए ये संयोजन गलत हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : A-II, B-III, C-IV, D-I।

त्वरित सुझाव: पहले आर्द्रता-मौसम और फ़ीचर-शब्दसीमा का पक्का मिलान करें, फिर शेष दोनों संबंध जाँचें।

---

4. तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया –
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया –
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, हे विप्लव के बादल ! [5 अंक]

4(i). कवि ने बादलों का आह्वान क्यों किया है ? [1 अंक]

(A) जीव-जंतुओं की विकल स्थिति को देखकर
(B) प्रकृति में सर्वत्र व्याप्त सूखे को देखकर
(C) लघु मानव के दुख से त्रस्त होकर
(D) गरमी के ताप से त्रस्त होकर

सही उत्तर: (C) लघु मानव के दुख से त्रस्त होकर

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांतिकारी परिवर्तन और नवजीवन की आशा का प्रतीक है। कवि पीड़ित सामान्य मनुष्य के दुख को देखकर इस परिवर्तन का आह्वान करता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: पद्यांश के संकेत समझें जग के दग्ध हृदय और दुख की छाया से संसार की पीड़ा सामने आती है। विप्लव के बादल का संबोधन तथा नवजीवन की आशा बताते हैं कि कवि दुख झेल रहे लघु मानव के जीवन में परिवर्तन चाहता है।

चरण 2: दूसरे विकल्प क्यों नहीं जीव-जंतुओं की विकलता का उल्लेख इस अंश का आधार नहीं है। सूखा और गरमी बादलों से जुड़ी प्राकृतिक स्थितियाँ हो सकती हैं, पर यहाँ उद्देश्य केवल मौसम बदलना नहीं है। सामाजिक पीड़ा और परिवर्तन की आकांक्षा के कारण लघु मानव का दुख सबसे उपयुक्त उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : लघु मानव के दुख से त्रस्त होकर।

त्वरित सुझाव: बादल के प्राकृतिक अर्थ पर रुकने के बजाय दग्ध हृदय, विप्लव और नवजीवन को साथ पढ़ें।

4(ii). समीर सागर में कौन-कौन से अलंकार हैं ? [1 अंक]

(A) अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा

(B) अनुप्रास एवं उपमा

(C) अनुप्रास एवं रूपक

(D) अनुप्रास एवं यमक

सही उत्तर: (C) अनुप्रास एवं रूपक

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में एक ही वर्ण की आवृत्ति से ध्वनि-सौंदर्य बनता है। रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; तुलना बताने वाले शब्द आवश्यक नहीं होते।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: अनुप्रास की पहचान समीर-सागर में दोनों शब्दों के आरंभ में स वर्ण की आवृत्ति है। यह समान वर्ण की पुनरावृत्ति काव्यात्मक ध्वनि उत्पन्न करती है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

चरण 2: दूसरे अलंकार की पहचान समीर को सागर के रूप में प्रस्तुत किया गया है, इसलिए रूपक है। जैसे अथवा समान कहकर तुलना नहीं की गई, अतः उपमा नहीं है। संभावना की कल्पना व्यक्त नहीं होती, इसलिए उत्प्रेक्षा नहीं; एक शब्द के अलग-अलग अर्थों में प्रयोग के अभाव में यमक भी नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : अनुप्रास एवं रूपक।

त्वरित सुझाव: स वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास और समीर को सीधे सागर कहने से रूपक अलग-अलग पहचानें।

4(iii). धरती के भीतर सोए अंकुर किस आशा में सिर ऊँचा कर रहे हैं ? [1 अंक]

(A) नव जीवन की

(B) अमृत-तुल्य जल की

(C) शीतल हवा की

(D) सूर्य के ताप की

सही उत्तर: (A) नव जीवन की

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का उत्तर उसके स्पष्ट शब्दों से स्थापित करना चाहिए। पृथ्वी के भीतर सुप्त अंकुर बादल की गर्जना से सजग होकर नए जीवन की आशा करते हैं।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ पढ़ें पद्यांश में आशाओं से नवजीवन की कहा गया है। इसी आशा के कारण अंकुर सिर ऊँचा कर विप्लव के बादल को देखते हैं। अंकुरों का जागना और ऊपर उठना नए जीवन के स्वागत का बिंब है।

चरण 2: शेष विकल्पों का परीक्षण जल अंकुरों के विकास में सहायक होता है, पर प्रश्न में जिस आशा का नाम पूछा गया है, वह स्पष्टतः नवजीवन है। शीतल हवा और सूर्य के ताप की आशा इस अंश में नहीं कही गई है। इसलिए सामान्य प्राकृतिक अनुमान के बजाय कविता के सीधे प्रमाण को चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : नव जीवन की।

त्वरित सुझाव: अंश में आशा के तुरंत बाद आए नवजीवन शब्द पर ध्यान दें; बाहरी प्राकृतिक अनुमान न जोड़ें।

4(iv). 'बादल' किसका प्रतीक है ? [1 अंक]

(A) बारिश का

(B) क्रांति का

(C) विनाश का

(D) शांति का

सही उत्तर: (B) क्रांति का

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक के प्रश्न में वस्तु का सामान्य अर्थ नहीं, कविता में उसका व्यापक अभिप्राय देखना चाहिए। यहाँ बादल शोषित जीवन को बदलने वाली क्रांतिकारी शक्ति का प्रतीक है।
- सही विकल्प चुनने के लिए प्रश्न के मुख्य शब्दों और अन्य विकल्पों की सीमाओं का मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: कविता का संबोधन देखें कवि ने बादल को विप्लव का बादल कहा है। रण-तरी, भेरी-गर्जन और नवजीवन की आशा जैसे संकेत उसके संघर्ष और परिवर्तनकारी स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। इसीलिए बादल का अभिप्राय क्रांति है।

चरण 2: अन्य अर्थों से भेद बारिश बादल का प्राकृतिक कार्य है, पर इस अंश का प्रतीकार्थ उससे व्यापक है। विनाश अकेला उद्देश्य नहीं, क्योंकि अंकुर नवजीवन की आशा कर रहे हैं। शांति का विकल्प भी रण और विप्लव के स्वर से मेल नहीं खाता। अतः केवल क्रांति सभी संकेतों को समेटती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : क्रांति का।

त्वरित सुझाव: विप्लव के बादल में विप्लव को पहचानें; नवजीवन की आशा क्रांति के रचनात्मक लक्ष्य को बताती है।

4(v). 'घन-भेरी गर्जन' के संबंध में कौन-सा तथ्य सही है ? [1 अंक]

(A) घन-भेरी गर्जन से निम्न एवं मध्यम वर्ग डर जाता है।

(B) घन-भेरी गर्जन से सभी वर्ग बेअसर रहते हैं।

(C) घन-भेरी गर्जन से निम्न वर्ग में नई आशा का संचार होता है।

(D) घन-भेरी गर्जन से निम्न एवं धनी वर्ग में नई आशा का संचार होता है।

सही उत्तर: (C) घन-भेरी गर्जन से निम्न वर्ग में नई आशा का संचार होता है।

हल:

अवधारणा:

- विप्लव का बादल शोषित वर्ग में जागरण और नए जीवन की आशा का प्रतीक है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: पंक्तियों का संकेत समझना कविता में बादल की गर्जना से पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर सजग हो जाते हैं। वे नवजीवन की आशा में सिर उठाकर बादल को देखते हैं। ये अंकुर उपेक्षित और शोषित निम्न वर्ग का संकेत देते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) में भय बताया गया है, जबकि यहाँ आशा और जागरण है। (B) का बेअसर रहना भी सजग होने के विपरीत है। (D) में धनी वर्ग को जोड़ना अनुचित है, क्योंकि क्रांति की आशा यहाँ पीड़ित वर्ग से जुड़ी है। (C) निम्न वर्ग में नई आशा का संचार बताकर अंश के भाव को सही व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष घन-भेरी गर्जन से निम्न वर्ग में नई आशा का संचार होता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: सुप्त अंकुर, सजग और नवजीवन को जोड़कर पढ़ें; इनसे भय नहीं, शोषित वर्ग का जागरण स्पष्ट होता है।

---

5. यह विडंबना की बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता। [5 अंक]

5(i). उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने 'विडंबना' की बात किसे कहा है ? [1 अंक]

(A) श्रम-विभाजन के नाम पर जातिवाद का विरोध करना

(B) श्रम-विभाजन के नाम पर जातिवाद का समर्थन करना

(C) श्रम-विभाजन के नाम पर समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटना

(D) कार्य-कुशलता के नाम पर समाज को विभिन्न वर्गों में बाँटना

सही उत्तर: (B) श्रम-विभाजन के नाम पर जातिवाद का समर्थन करना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लेखक के मूल्यांकन को पहचानने के लिए आरंभिक कथन और उसके तर्क का संबंध देखना चाहिए।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: विडंबना का संदर्भ लेखक कहते हैं कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। वे कार्य-कुशलता के लिए आवश्यक श्रम-विभाजन को जाति-प्रथा के समर्थन का आधार बनाते हैं। लेखक इसी समर्थन की विसंगति सामने रखते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर (A) जातिवाद का विरोध कहता है, जबकि लेखक उसके समर्थन पर आपत्ति करते हैं। (C) और (D) में समाज को वर्गों में बाँटने की बात है; वे उस तर्क का सीधा उत्तर नहीं हैं जिसे जातिवाद के पोषक प्रस्तुत करते हैं। (B) में श्रम-विभाजन के नाम पर जातिवाद का समर्थन करने की बात ठीक है।

चरण 3: निष्कर्ष श्रम-विभाजन के नाम पर जातिवाद का समर्थन करना विडंबना है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: विडंबना पूछे जाने पर पहले वाक्य के साथ उसके समर्थन में बताए गए तर्क को पढ़ें।

5(ii). आधुनिक सभ्य समाज के लिए 'कार्य-कुशलता' का आधार क्या है ? [1 अंक]

(A) जाति-प्रथा

(B) श्रम-विभाजन

(C) दक्षता

(D) शिक्षा

सही उत्तर: (B) श्रम-विभाजन

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष सूचना वाले प्रश्न में गद्यांश का स्पष्ट कथन उत्तर का आधार बनता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: संबंधित वाक्य पहचानना अंश में कहा गया है कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है। अतः कार्य-कुशलता का बताया गया आधार कार्यों का सुव्यवस्थित विभाजन है।

चरण 2: सभी विकल्पों की जाँच (A) जाति-प्रथा को लेखक श्रम-विभाजन से अलग करके उसकी आलोचना करते हैं। (C) दक्षता कार्य-कुशलता से संबंधित शब्द है, पर प्रश्न में उसका आधार पूछा गया है। (D) शिक्षा का उल्लेख इस तर्क में नहीं है। (B) श्रम-विभाजन सीधे गद्यांश में दिया गया उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष आधुनिक सभ्य समाज में कार्य-कुशलता का आधार श्रम-विभाजन है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कार्य-कुशलता के तुरंत बाद आए आवश्यक साधन को पहचानें; समानार्थी शब्द को आधार न मानें।

5(iii). गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. विश्व में सभी जगह ऊँच-नीच पायी जाती है।

II. श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती।

III. जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करती है।

ऊपरलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल II

(B) केवल I

(C) I और II

(D) II और III

सही उत्तर: (D) II और III

हल:

अवधारणा:

- कथन आधारित प्रश्न में प्रत्येक कथन का निर्णय गद्यांश की सीमा के भीतर अलग-अलग करना चाहिए।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: कथन I का परीक्षण कथन I सभी जगह ऊँच-नीच पाए जाने की बात करता है। गद्यांश भारतीय जाति-प्रथा की विशेषता बताते हुए कहता है कि ऐसा अन्य समाज में नहीं पाया जाता। इसलिए यह व्यापक कथन अंश से समर्थित नहीं है।

चरण 2: कथन II और III का परीक्षण गद्यांश स्पष्ट करता है कि सभ्य समाज में श्रम-विभाजन श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन नहीं करता। अतः II सही है। इसके विपरीत, जाति-प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करती है; इसलिए III भी सही है। (A) में III छूटता है; (B) और (C) में गलत I शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन II और III सही हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले तीनों कथनों पर अलग निर्णय लिखें, फिर सही कथनों से मेल खाते विकल्प का चयन करें।

5(iv). गद्यांश के आधार पर जाति-प्रथा का सबसे बड़ा दोष क्या है ? [1 अंक]

(A) श्रमिकों का विभाजन

(B) श्रम का विभाजन

(C) पारिश्रमिक के आधार पर ऊँचा-नीचा मानना

(D) विभाजित वर्गों को ऊँचा-नीचा मानना

सही उत्तर: (D) विभाजित वर्गों को ऊँचा-नीचा मानना

हल:

अवधारणा:

- लेखक की मुख्य आपत्ति साधारण कार्य-विभाजन और सामाजिक ऊँच-नीच के बीच अंतर स्पष्ट करती है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: दोष का विशिष्ट रूप अंश में जाति-प्रथा पर दो आपत्तियाँ हैं। वह श्रमिकों को अस्वाभाविक वर्गों में बाँटती है और उन वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँचा-नीचा भी ठहराती है। अंतिम वाक्य इस दूसरी विशेषता पर जोर देता है।

चरण 2: विकल्पों का तुलनात्मक परीक्षण (A) में केवल श्रमिकों का विभाजन है, इसलिए ऊँच-नीच वाला प्रमुख दोष अधूरा रहता है। (B) श्रम का विभाजन है, जिसे लेखक सभ्य समाज की आवश्यकता कहते हैं। (C) पारिश्रमिक को आधार बनाता है, जबकि अंश में ऐसा आधार नहीं दिया गया। (D) विभाजित वर्गों को ऊँचा-नीचा मानना सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-प्रथा का सबसे बड़ा दोष विभाजित वर्गों को ऊँचा-नीचा मानना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: न केवल और बल्कि जैसे संकेतों पर ध्यान दें; बल्कि के बाद लेखक की अधिक तीखी आपत्ति आती है।

5(v). गद्यांश के आधार पर विश्व के किसी भी समाज में क्या नहीं पाया जाता ? [1 अंक]

(A) श्रम के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव
(B) जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव
(C) व्यक्ति की रुचि के आधार पर भेदभाव
(D) व्यक्ति के धर्म के आधार पर भेदभाव

सही उत्तर: (B) जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव

हल:

अवधारणा:

- संदर्भ-बोध में अंतिम वाक्य के संकेत को उससे पहले वर्णित व्यवस्था से जोड़कर अर्थ तय किया जाता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का संदर्भ लेखक भारतीय जाति-प्रथा की चर्चा कर रहे हैं। उसमें श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करके विभाजित वर्गों को एक-दूसरे से ऊँचा-नीचा करार दिया जाता है। इसी विशिष्ट जातिगत व्यवस्था के विषय में अंतिम टिप्पणी की गई है।

चरण 2: विकल्पों की सीमा जाँचना (A) श्रम के आधार पर भेदभाव कहकर श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा का अंतर धुँधला करता है। (C) रुचि और (D) धर्म पर आधारित भेदभाव का उल्लेख यहाँ नहीं है। (B) जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव इस प्रसंग को ठीक व्यक्त करता है। उत्तर गद्यांश के कथन की सीमा में है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के अनुसार जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव अन्य समाजों में नहीं पाया जाता। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अंतिम कथन का अर्थ उसके पूर्ववर्ती जाति-प्रथा वाले वाक्य से जोड़ें; सामान्य विश्वव्यापी निष्कर्ष न निकालें।

6(i). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर लिखिए कि यशोधर बाबू छुट्टी के समय अपने मातहतों से हँसी-मजाक क्यों करते थे ? [1 अंक]

(A) आने वाले दिन में उनसे अपना काम करवाने के लिए
(B) उनकी नज़रों में अपने-आपको उनका हितैषी सिद्ध करने के लिए
(C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए
(D) दफ़्तर के काम की दिन-भर की थकावट मिटाने के लिए

सही उत्तर: (C) दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पात्र के व्यवहार का उद्देश्य पहचानने के लिए कहानी में उसके दफ्तर के औपचारिक और अनौपचारिक व्यवहार को साथ पढ़ना चाहिए।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: यशोधर बाबू का व्यवहार यशोधर बाबू कामकाज के दौरान अपने मातहतों से शुष्क व्यवहार करते हैं। छुट्टी के समय वे उनसे हँसी-मजाक करके दिन भर की उसी कठोर औपचारिकता को हल्का करते हैं। इससे उनके व्यवहार में सहजता आती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) में अगले दिन काम करवाने का स्वार्थ और (B) में हितैषी सिद्ध करने का दिखावा बताया गया है; ये

उनके इस व्यवहार का दिया गया कारण नहीं हैं। (D) सामान्य शारीरिक थकावट की बात करता है। कहानी का विशिष्ट कारण दिन भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण है, जो (C) में है।

चरण 3: निष्कर्ष वे दिन-भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए हँसी-मजाक करते थे। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दफ्तर के इस प्रसंग में थकावट से अधिक दिन भर के व्यवहार और छुट्टी के समय के बदलाव पर ध्यान दें।

6(ii). "बड़े बाऊ, आपकी अपनी चूनेदानी का क्या हाल है ?" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'चूनेदानी' से किस चड्ढा की ओर संकेत किया है ? [1 अंक]

(A) चूना रखने की डिब्बी

(B) घड़ी रखने की डिब्बी

(C) घड़ी

(D) पैन

सही उत्तर: (C) घड़ी

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्यात्मक संबोधन का आशय शब्द के शाब्दिक अर्थ से नहीं, कहानी के प्रसंग और संबंधित वस्तु से तय होता है।
- सही विकल्प चुनते समय उसके पूरे कथन का मूल पाठ के भाव और संदर्भ से मेल जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: चूनेदानी का प्रसंग चड्ढा यशोधर बाबू की पुरानी घड़ी के लिए चूनेदानी शब्द का प्रयोग करता है। यह उनकी घड़ी के पुराने ढंग पर किया गया हँसी-मजाक है। प्रश्न में उसी वस्तु का संकेत पहचानना है।

चरण 2: विकल्पों को परखना (A) चूना रखने की डिब्बी शब्द का शाब्दिक अर्थ है, लेकिन प्रसंग में वह वस्तु अभिप्रेत नहीं है। (B) घड़ी रखने की डिब्बी भी गलत है, क्योंकि टिप्पणी घड़ी के बारे में है। (D) पैन का इस टिप्पणी से संबंध नहीं है। अतः (C) घड़ी ही प्रसंगानुकूल उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष चूनेदानी से यशोधर बाबू की घड़ी की ओर संकेत है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्यात्मक नाम वाली वस्तु पहचानते समय शब्दकोश के अर्थ से पहले कहानी का तत्काल प्रसंग देखें।

6(iii). "जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।" यशोधर बाबू द्वारा अपने बच्चों से यह बात किस दृष्टि से कही जाती होगी ? [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनके भाग्य की सराहना करने के लिए

(C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

(D) मित्रों की नज़रों में ऊँचा उठने के लिए

सही उत्तर: (C) बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मनःस्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना यशोधर बाबू ने कम उम्र में अपने माता-पिता को खो दिया था। इसलिए वे अभिभावक का संरक्षण मिलने और उससे वंचित रहने के अंतर को भली-भाँति समझते हैं। बच्चों से कही गई बात में उनके अपने अनाथ बचपन की स्मृति छिपी हुई है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान यहाँ बाप के जीवित रहने का अर्थ बच्चों के सिर पर स्नेह और संरक्षण का हाथ होना है। वे इस बात से प्रसन्न हैं कि उनके बच्चों को पिता का सहारा प्राप्त है। इसलिए कथन का मूल भाव बच्चों के सनाथ होने की खुशी है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में व्यंग्य का भाव मुख्य नहीं है। (B) सामान्य भाग्य-प्रशंसा तक सीमित है, जबकि प्रसंग विशेष रूप से पिता के संरक्षण का है। (D) में मित्रों पर प्रभाव डालने की बात कथन से प्रमाणित नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : बच्चों के सनाथ होने की प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(iv). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पुत्र से गाऊन लेते समय यशोधर बाबू के हृदय को कौन-सी बात बेध गयी ? [1 अंक]

(A) पुत्र द्वारा गाऊन की कीमत बताना

(B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

(C) पुत्र द्वारा उनके पुलोवर का फटा हुआ कहना

(D) गाऊन के नीचे पजामा-कुर्ता पहनने को कहना

सही उत्तर: (B) पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना भूषण अपने पिता को गाऊन भेंट करते हुए उसे सुबह दूध लेने जाते समय पहनने की बात कहता है। यह उपयोग बताने वाला कथन यशोधर बाबू के मन को चोट पहुँचाता है। उपहार के साथ जुड़ी बात उनके लिए उपहार से अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान उन्हें लगता है कि बेटा स्वयं सुबह उठकर दूध लाने और पिता को आराम देने की बात भी कह सकता था। बेटे का ध्यान पिता की रोज की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने के बजाय उस काम में गाऊन पहनने पर है। इसी संवेदनात्मक दूरी से उनका हृदय बेध जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में गाऊन की कीमत, (C) में पुराने पुलोवर और (D) में पजामा-कुर्ता पहनने की बात दी गई है। इनमें से कोई भी उस चोट का मूल कारण नहीं है, जो पुत्र द्वारा दूध लाने का काम पिता से ही अपेक्षित करने पर उत्पन्न होती है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : पुत्र द्वारा दूध लाने की बात कहना।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(ix). 'महाकुंड का पानी रिस न सके और बाहर का अशुद्ध पानी कुंड में न आए', इसके लिए मुअनजो-दड़ो में क्या व्यवस्था की गई थी ? [1 अंक]

(A) कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए कुएँ की व्यवस्था की गई।

(B) कुंड के चारों तरफ पक्के कक्षों की व्यवस्था की गई।

(C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

(D) कुंड के पास पक्की और ईंटों से ढकी नालियों की व्यवस्था की गई।

सही उत्तर: (C) कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना महाकुंड की बनावट में स्वच्छ पानी को सुरक्षित रखने और उसे बाहर के अशुद्ध पानी से बचाने की सावधानी थी। प्रश्न जल की आपूर्ति नहीं, बल्कि कुंड की जलरोधक बनावट के विषय में पूछता है। इसलिए तल और दीवारों की संरचना पर ध्यान देना आवश्यक है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान कुंड के तल और दीवारों की ईंटों की चिनाई चूने तथा चिरोड़ी से की गई थी। यह व्यवस्था जोड़ों को सुरक्षित करती थी, जिससे भीतर का पानी बाहर न रिसे और बाहर का दूषित पानी भीतर न पहुँच सके। यही प्रश्न में बताए गए दोनों उद्देश्यों से सीधा संबंध रखती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का कुआँ जल की आपूर्ति का साधन है। (B) के चारों ओर के कक्ष दूसरी सुविधाओं से संबंधित हैं। (D) की ढकी नालियाँ निकासी और सफाई में सहायक हैं। ये व्यवस्थाएँ तल तथा दीवारों की जलरोधक चिनाई का स्थान नहीं लेतीं।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : कुंड के तल और दीवारों पर ईंटों की चूने और चिरोड़ी से चिनाई की गई।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(v). लेखक का पिता दत्ता जी राव के यहाँ से बुलावा आने की बात सुनकर तुरंत क्यों चला गया ? [1 अंक]

(A) भयभीत होकर

(B) घबराहट में

(C) सम्मान समझकर

(D) ललचाकर

सही उत्तर: (C) सम्मान समझकर

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना दत्ता जी राव गाँव में प्रभाव और प्रतिष्ठा रखने वाले व्यक्ति थे। उनके बुलावे को लेखक का पिता अपने लिए महत्त्वपूर्ण मानता था। लेखक की पढ़ाई की समस्या पर बातचीत कराने के लिए उनका सहारा लेना इसी सामाजिक प्रभाव से जुड़ा हुआ है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान उनके यहाँ से बुलावा आने पर पिता इसे अपने सम्मान की बात समझकर तुरंत चले जाते हैं। इस समय पूछे गए व्यवहार का कारण दत्ता जी राव के बुलावे से मिला महत्त्व है। बाद में उनसे होने वाली बातचीत या डाँट को इस आरंभिक प्रतिक्रिया

से अलग रखना चाहिए।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) का भय और (B) की घबराहट बुलावा सुनते ही जाने की मुख्य वजह नहीं हैं। (D) में किसी लाभ का लालच बताया गया है, जिसका इस प्रसंग में आधार नहीं है। इसलिए सम्मान समझकर जाना ही पाठानुकूल कारण है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : सम्मान समझकर।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(vi). "दत्ता जी राव ने दादा की खूब हजामत बनाई।" 'जूझ' कहानी से ली गई इस पंक्ति में 'हजामत बनाई' का क्या आशय है ?

[1 अंक]

(A) खूब खातिरदारी करना

(B) दाढ़ी-मूँछ को साफ करना

(C) मारपीट करना

(D) खरी-खोटी सुनाना

सही उत्तर: (D) खरी-खोटी सुनाना

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना हजामत बनाना एक मुहावरा है। इसका अर्थ प्रसंग के अनुसार किसी को खूब डाँटना या खरी-खोटी सुनाना होता है। यहाँ शब्दों का अर्थ केवल दाढ़ी-मूँछ साफ करने की क्रिया से नहीं लिया जा सकता, क्योंकि प्रसंग लेखक की पढ़ाई रोकने पर पिता से बातचीत का है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान दत्ता जी राव पिता की लापरवाही और लेखक को पढ़ाई से दूर रखने के व्यवहार पर उन्हें कठोर बातें सुनाते हैं। लेखक ने इसी फटकार के लिए हजामत बनाने का मुहावरा प्रयोग किया है। इससे उनके कड़े विरोध और पिता की स्थिति का बोध होता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) की खातिरदारी फटकार के विपरीत है। (B) मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है, जो यहाँ लागू नहीं होता। (C) में शारीरिक मारपीट की बात है, जबकि कथन का आशय शब्दों द्वारा डाँटना है। अतः (D) प्रसंग और मुहावरे दोनों के अनुरूप है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : खरी-खोटी सुनाना।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(vii). निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

I. आनंदा के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलाते थे।

II. सौंदलगेकर जी लेखक को गणित पढ़ाते थे।

III. लेखक को कक्षा में बसंत पाटिल का साथ मिलता है।

ऊपरवर्णित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) I और III

(B) II और III

(C) केवल I

(D) केवल III

सही उत्तर: (A) I और III

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना कथन I सही है। पाठ में लेखक के परिवार की खेती और गुड़ बनाने के काम का उल्लेख आता है। उनके यहाँ गाँव में सबसे पहले कोल्हू चलने की बात कही गई है। इसलिए इस कथन को पिता के बाद के आलस्य के आधार पर गलत नहीं माना जा सकता।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान कथन II गलत है, क्योंकि सौंदलगेकर जी लेखक को मराठी पढ़ाते थे। वे कविता को लय और भाव के साथ पढ़ाकर लेखक की काव्य-रुचि जगाते हैं। कथन III सही है, क्योंकि कक्षा में बसंत पाटिल का साथ लेखक को पढ़ाई और अभ्यास में सहायता देता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच इस प्रकार सही कथन I और III हैं। (B) में गलत कथन II शामिल है। (C) केवल I और (D) केवल III बताते हैं; दोनों में एक सही कथन छूट जाता है। सभी कथनों को अलग-अलग जाँचने पर (A) ही पूर्ण सही संयोजन मिलता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : I और III।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(viii). मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को अनायास ही कौन-सा गाँव याद आ गया ? [1 अंक]

(A) चंडीगढ़

(B) राजगढ़

(C) कुलधरा

(D) मरुधरा

सही उत्तर: (C) कुलधरा

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना लेखक मुअनजो-दड़ो के पुराने घरों में घूमते हुए वहाँ के कभी बसे हुए जीवन को अनुभव करते हैं। उजड़े

घरों की बनावट और उनमें मनुष्यों के रहने की कल्पना उन्हें भारत के एक उजड़े गाँव की याद दिलाती है। यह समानता बस्ती की अनुभूति से संबंधित है।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान इस प्रसंग में याद आने वाला गाँव कुलधरा है। मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते समय लेखक को उसका स्मरण अनायास होता है। दोनों स्थानों में सूने घरों के बीच पुराने निवासियों के जीवन का आभास मिलता है; यही स्मृति-संबंध उत्तर को निर्धारित करता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) चंडीगढ़, (B) राजगढ़ और (D) मरुधरा इस प्रसंग में स्मरण किए गए गाँव के नाम नहीं हैं। केवल किसी नाम का नगर या रेगिस्तानी क्षेत्र से जुड़ा होना पर्याप्त नहीं है। पाठ में आए विशिष्ट स्थान के अनुसार (C) कुलधरा सही उत्तर है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : कुलधरा।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

6(x). 'सिंधु घाटी मैदान की संस्कृति थी, पर पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था।' क्यों ? [1 अंक]

(A) सिंधु घाटी सभ्यता की सुरक्षा के कारण

(B) सिंधु नदी के किनारे बसा होने के कारण

(C) सिंधु घाटी सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल को स्थापित करने के लिए

(D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

सही उत्तर: (D) बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- पाठ के प्रसंग, पात्रों की मन:स्थिति और कथन के आशय के आधार पर सही विकल्प का चयन किया जाता है।
- सभी विकल्पों को दिए गए प्रसंग से मिलाकर तथ्य और भाव दोनों की संगति जाँची जाती है।

चरण 1: प्रसंग को समझना सिंधु घाटी की सभ्यता मैदान की सभ्यता थी। मैदान में नदी के पास बसने पर बाढ़ का खतरा रहता है। मुअनजो-दड़ो की ऊँची बसावट को समझने के लिए भौगोलिक स्थिति और नदी से आने वाले इस खतरे का संबंध देखना चाहिए।

चरण 2: सही अर्थ की पहचान नगर को छोटे-मोटे टीलों अथवा ऊँचे आधारों पर बसाने का उद्देश्य बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचाव था। ऊँचा स्तर घरों और लोगों को बढ़ते पानी से सुरक्षित रखने में सहायक होता है। इस प्रकार नगर की बनावट में व्यावहारिक सुरक्षा का ध्यान दिखाई देता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सामान्य सुरक्षा कहता है, पर प्रश्न के विशिष्ट कारण को स्पष्ट नहीं करता। (B) नदी के किनारे होना परिस्थिति है, ऊँचाई का पूरा उद्देश्य नहीं। (C) केवल वास्तुकौशल प्रदर्शित करने की बात है। (D) बाढ़ से सुरक्षा का प्रत्यक्ष कारण बताता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : बाढ़ के समय सिंधु नदी के प्रकोप से बचने के लिए।

त्वरित सुझाव: पहले पाठ का संबंधित प्रसंग याद करें, फिर उसी से मेल खाने वाले विशिष्ट कारण या अर्थ को चुनें।

7(क). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : वर्तमान तकनीकी युग और हस्तशिल्प कलाएँ [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का परिचय, उससे जुड़ी समस्या और सकारात्मक संभावना का क्रमबद्ध चित्रण किया जाता है।
- वर्तमान तकनीक और हस्तशिल्प के संबंध में परंपरा, रोजगार, बाजार और कारीगर की पहचान को एक साथ देखना आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय कीजिए शीर्षक के बाद एक संक्षिप्त, प्रवाहपूर्ण लेख लिखना उपयुक्त है। आरंभ में मशीन और कारीगर के कार्य का अंतर उभारें। फिर मशीनों से मिलने वाली प्रतिस्पर्धा तथा डिजिटल बाजार की संभावनाएँ बताएं। अंत में तकनीक को परंपरा के संरक्षण से जोड़कर अपना विचार पूरा करें। भाषा चित्रात्मक हो, पर विचार विषय से न भटकें।

चरण 2: भाषा और विचारों की संगति जाँचिए लेख की जाँच करते समय देखें कि हर वाक्य केंद्रीय विषय से जुड़ा है। शीर्षक संक्षिप्त और उपयुक्त रहे। विचारों में आरंभ, विकास और समापन का स्वाभाविक क्रम हो। उदाहरण विचार को स्पष्ट करें और शब्द सीमा में अनावश्यक दोहराव न आए। नमूना लेख में दिया गया अंतिम वाक्य उसी मुख्य विचार को आगे बढ़ाता है जिसकी स्थापना आरंभ में हुई है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख **वर्तमान तकनीकी युग और हस्तशिल्प कलाएँ**

मशीनों की तेज आवाज के बीच कुम्हार का चाक आज भी अपनी कहानी कहता है। मिट्टी के दीपक हों या हाथ से बुनी चादरें, हस्तशिल्प में कारीगर की कल्पना और हमारी संस्कृति की पहचान बसती है। तकनीकी युग ने सस्ती मशीननिर्मित वस्तुओं से इन कलाओं को चुनौती दी है, किंतु नए अवसर भी दिए हैं। अब दूर गाँव का शिल्पकार इंटरनेट के माध्यम से अपना सामान दुनिया तक पहुँचा सकता है। डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन प्रदर्शनियाँ उसके लिए नए ग्राहक जुटा सकती हैं। आवश्यकता है कि उसे प्रशिक्षण, उचित मूल्य और बाजार मिले। तकनीक को कारीगर का सहायक बनाना होगा। जब नवाचार के साथ परंपरा का हाथ जुड़ेगा, तब हस्तशिल्प केवल स्मृति नहीं, सम्मानजनक आजीविका और जीवंत विरासत बनेगा।

चरण 4: निष्कर्ष तकनीक का संवेदनशील उपयोग हस्तशिल्प की मौलिकता बचाते हुए कारीगरों को बाजार, सम्मान और आजीविका दे सकता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक ठोस दृश्य से आरंभ करें और चुनौती के साथ समाधान भी अवश्य जोड़ें।

7(ख). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : आपसी रिश्तों में बढ़ती स्वार्थपरकता [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में सामाजिक अनुभव को संवेदनशील भाषा और स्पष्ट विचार के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- स्वार्थपरकता का अर्थ केवल अपने लाभ को प्राथमिकता देना है; रिश्तों की आत्मीयता विश्वास, सहभागिता और संवेदना पर निर्भर करती है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाइए शीर्षक के बाद रोजमर्रा की किसी परिचित स्थिति से आरंभ करें। मुख्य भाग में लाभ केंद्रित व्यवहार के कारण और उसके प्रभाव बताएं। अंत में संवाद, सहयोग और समय देने जैसे व्यावहारिक उपायों से आशापूर्ण निष्कर्ष निकालें। सभी रिश्तों को स्वार्थी बताने के बजाय बढ़ती प्रवृत्ति का विवेचन करें। नमूना लेख को लगभग 120 शब्दों में सीमित रखें।

चरण 2: भाषा और विचारों की संगति जाँचिए लेख की जाँच करते समय देखें कि हर वाक्य केंद्रीय विषय से जुड़ा है। शीर्षक संक्षिप्त और उपयुक्त रहे। विचारों में आरंभ, विकास और समापन का स्वाभाविक क्रम हो। उदाहरण विचार को स्पष्ट करें और शब्द सीमा में अनावश्यक दोहराव न आए। नमूना लेख में दिया गया अंतिम वाक्य उसी मुख्य विचार को आगे बढ़ाता है जिसकी स्थापना आरंभ में हुई है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख **आपसी रिश्तों में बढ़ती स्वार्थपरकता**

कभी पड़ोसी के दरवाजे पर दस्तक देने के लिए किसी काम का होना जरूरी नहीं था। आज कई बार फोन भी तभी बजता है, जब कोई

जरूरत आन पड़ती है। सफलता की दौड़ और दिखावे की चाह ने रिश्तों को लाभ के तराजू पर रखना शुरू कर दिया है। समय और स्नेह की जगह अपेक्षाएँ बढ़ रही हैं। परिणाम है, भीड़ में भी अकेलापन और छोटी बातों पर टूटता विश्वास। फिर भी हर संबंध स्वार्थ का बंदी नहीं है। बीमार मित्र के पास बैठना, बुजुर्गों की बात सुनना और बिना प्रतिफल चाहे सहायता करना आत्मीयता लौटा सकता है। रिश्तों को वस्तु नहीं, जिम्मेदारी समझना होगा। जब हम लेने से पहले देने का सुख पहचानेंगे, तभी संबंधों में फिर अपनापन खिलेगा।

चरण 4: निष्कर्ष निस्स्वार्थ सहयोग, संवाद और संवेदनशील व्यवहार से रिश्तों में बढ़ती दूरी घटाई जा सकती है।

त्वरित सुझाव: रिश्तों पर लिखते समय सामान्य आरोपों के बजाय परिचित उदाहरण, भावनात्मक प्रभाव और सकारात्मक उपाय दीजिए।

7(ग). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का स्पष्ट परिचय, विचारों का तार्किक विस्तार और प्रभावशाली समापन होता है।
- विश्व जनमत में सम्मान का आधार सहयोग, विश्वसनीयता और जनकल्याण के लिए किए गए कार्य होते हैं।

चरण 1: विषय और रूपरेखा इस विषय पर शीर्षक सहित विचारप्रधान रचनात्मक लेख लिखना उचित है। शुरुआत भारत की बदलती वैश्विक पहचान से करें। फिर विज्ञान, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग जैसे आधारों को जोड़ें। किसी देश के प्रति अपमान या निराधार आँकड़ों के स्थान पर संतुलित भाषा रखें। अंत में बढ़ते प्रभाव के साथ बढ़ते दायित्व का संकेत दें।

चरण 2: प्रस्तुति की जाँच शीर्षक और मुख्य विचार के बीच स्पष्ट संबंध रखें। हर वाक्य पिछले विचार को आगे बढ़ाए, ताकि लेख बिखरे हुए कथनों का समूह न बने। शब्द सीमा का ध्यान रखते हुए अनावश्यक पुनरावृत्ति हटाएँ। भाषा सहज, वर्तनी शुद्ध और विराम चिह्न उचित हों। अंतिम वाक्य विषय की मूल भावना को उभारकर पाठक पर प्रभाव छोड़े। नीचे दिया गया नमूना इसी क्रम में विषय का विकास करता है।

चरण 3: लगभग 120 शब्दों में आदर्श लेख **विश्व जनमत में भारत का बढ़ता दबदबा**

कभी दुनिया भारत को केवल परंपराओं का देश मानती थी; आज वह उसकी प्रतिभा, तकनीक और विचारों की ओर भी देखती है। अंतरिक्ष अनुसंधान, डिजिटल सुविधाओं और उद्यमिता ने भारत की नई पहचान बनाई है। योग और भारतीय संस्कृति ने देशों के बीच आत्मीयता के पुल बनाए हैं। संकट के समय सहायता देने और संवाद का समर्थन करने से भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विकासशील देशों की समस्याएँ उठाकर भारत साझा भविष्य की बात करता है। यह बढ़ता सम्मान केवल गर्व का अवसर नहीं, जिम्मेदारी भी है। शिक्षा, समानता और पर्यावरण के क्षेत्र में प्रगति इस प्रभाव को स्थायी बनाएगी। जब शक्ति के साथ संवेदना जुड़ती है, तभी कोई देश विश्व जनमत में सच्चा नेतृत्व अर्जित करता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव को उपलब्धियों, सहयोग और उत्तरदायित्व से जोड़ते हुए संतुलित दृष्टि प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: ऐसे विषय में तीन ठोस आधार चुनें और समापन में उपलब्धि के साथ दायित्व जोड़ें; अप्रमाणित आँकड़ों से बचें।

7(घ). निम्नलिखित दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
शीतलता बरसाता चाँद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति आधारित रचनात्मक लेख में दृश्य, अनुभूति और कल्पना को एक केंद्रीय भाव से जोड़ा जाता है।
- चंद्रमा की शीतलता का वर्णन बिंबों और संवेदनाओं से करें; विषय से जुड़े रहते हुए प्रभावशाली समापन दें।

चरण 1: लेख का भाव और रूपरेखा यह विषय कल्पनाप्रधान प्रकृति चित्रण का अवसर देता है। पहले चाँदनी रात का दृश्य बनाएँ, फिर उसकी शांति का मन पर प्रभाव दिखाएँ। आकाश, पेड़, छत और धरती जैसे परिचित बिंब भाषा को सहज बनाते हैं। यहाँ शीतलता का प्रयोग अनुभूति और काव्यात्मक प्रभाव के लिए है। संक्षिप्त शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों में एक सुसंगत लेख लिखें।

चरण 2: प्रस्तुति की जाँच शीर्षक और मुख्य विचार के बीच स्पष्ट संबंध रखें। हर वाक्य पिछले विचार को आगे बढ़ाए, ताकि लेख बिखरे हुए कथनों का समूह न बने। शब्द सीमा का ध्यान रखते हुए अनावश्यक पुनरावृत्ति हटाएँ। भाषा सहज, वर्तनी शुद्ध और विराम चिह्न उचित हों। अंतिम वाक्य विषय की मूल भावना को उभारकर पाठक पर प्रभाव छोड़े। नीचे दिया गया नमूना इसी क्रम में विषय का विकास करता है।

चरण 3: लगभग 120 शब्दों में आदर्श लेख **शीतलता बरसाता चाँद**

दिन भर की तपन के बाद जब चाँद आकाश में उभरता है, तो लगता है जैसे किसी ने धरती के माथे पर ठंडा हाथ रख दिया हो। उसकी चाँदनी छतों, पेड़ों और पगडंडियों पर चुपचाप बिछ जाती है। हवा में घुली नीरवता थके मन को विश्राम देती है। मैं छत पर खड़ा उसे देखता हूँ तो दिन की उलझनें कुछ हल्की लगने लगती हैं। चाँद किसी से भेदभाव नहीं करता; उसकी उजली आभा झोंपड़ी और महल दोनों तक पहुँचती है। बादलों के पीछे छिपकर फिर निकल आना मानो आशा का संदेश देता है। वह सिखाता है कि उजाला फैलाने के लिए शोर जरूरी नहीं। अपने शांत सौंदर्य से चाँद रात को ही नहीं, हमारे भीतर के अँधेरे को भी कोमल बना देता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख चाँदनी के दृश्य से आरंभ होकर मानसिक शांति, समानता और आशा की अनुभूति तक पहुँचता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति पर लिखते समय दृश्य के साथ मन की अनुभूति जोड़ें और एक ही केंद्रीय बिंब को आरंभ से अंत तक बनाए रखें।

8(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के संबंध में किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में विषय का सही आशय समझना और अपने अनुभवों को उससे जोड़ना आवश्यक है।
- रचना की मौलिकता के साथ विचारों का क्रम, भाषा की स्पष्टता और शब्दसीमा का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: विषय समझकर सामग्री चुनना नया विषय मिलने पर घबराने के बजाय उसके मुख्य संकेत पहचानने चाहिए। अपने सामाजिक परिवेश, अनुभव और कल्पना से संबंधित बिंदु जुटाएँ। केवल जानकारी गिनाने के स्थान पर विषय को देखने का अपना दृष्टिकोण विकसित करें। अनावश्यक विस्तार और विषय से असंबद्ध प्रसंग हटा दें।

चरण 2: विचारों को सुव्यवस्थित करना आरंभ विषय में प्रवेश कराए, मध्य भाग विचार का विस्तार करे और अंत स्वाभाविक निष्कर्ष दे। छोटी, सहज और प्रभावी भाषा अपनाएँ। लिखने के बाद दोहराव, वर्तनी और विचारों की असंगति जाँचें। नीचे इन बातों का लगभग 60 शब्दों में संक्षिप्त उत्तर है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर नए अथवा अप्रत्याशित विषय पर लिखते समय पहले उसका आशय समझना चाहिए। अपने अनुभव, परिवेश और कल्पना के आधार पर मौलिक विचार चुनने चाहिए। विचारों को रोचक आरंभ, क्रमबद्ध विस्तार और प्रभावी अंत में व्यवस्थित करें। भाषा सहज, स्पष्ट और विषयानुकूल हो। अनावश्यक विस्तार तथा दोहराव से बचते हुए शब्दसीमा, वर्तनी और व्याकरण की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सफल रचनात्मक लेखन के लिए विषय की समझ, मौलिक दृष्टि, क्रमबद्ध प्रस्तुति और स्पष्ट भाषा आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े तीन बिंदु लिखें, फिर उन्हें आरंभ, विस्तार और अंत का क्रम दें।

8(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
रेडियो नाटक की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम की विधा है; श्रोता ध्वनि के आधार पर दृश्य की कल्पना करता है।
- संवाद, ध्वनि प्रभाव, संगीत और मौन मिलकर पात्र, परिवेश तथा नाटकीय तनाव को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: प्रासंगिकता का आधार पहचानना रेडियो नाटक के लिए मंच, वेशभूषा अथवा दृश्य देखने की आवश्यकता नहीं होती। इसे सुनते हुए श्रोता अपनी कल्पना में घटनाओं और पात्रों को रूप देता है। मनोरंजन के साथ सामाजिक विषयों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की इसकी क्षमता इसकी उपयोगिता बनाए रखती है।

चरण 2: श्रव्य शिल्प स्पष्ट करना मंच पर दिखाई देने वाली क्रिया को यहाँ संवादों और उपयुक्त ध्वनियों से समझाना होता है। पात्रों की आवाज़ अलग पहचान दे और बोलचाल की भाषा स्वाभाविक लगे। संगीत वातावरण निर्मित करता है; मौन भी तनाव अथवा भाव को गहरा सकता है। अनावश्यक पात्र और लंबे संवाद सुनने में उलझन पैदा करते हैं।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर रेडियो नाटक आज भी मनोरंजन और सामाजिक चेतना का प्रभावी साधन है। यह श्रोता की कल्पना में दृश्य रचता है तथा व्यापक जनसमुदाय तक पहुँच सकता है। इसका आधार दृश्य नहीं, श्रव्य अनुभव है। संवाद, स्वर, संगीत, ध्वनि प्रभाव और मौन से पात्र, वातावरण तथा घटनाएँ उभरती हैं। इसमें सरल भाषा, छोटे स्वाभाविक संवाद और आवाज़ों की स्पष्ट पहचान आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक की प्रासंगिकता उसकी पहुँच और कल्पनाशीलता में है; उसका विशिष्ट शिल्प ध्वनियों से नाटकीय संसार रचता है।

त्वरित सुझाव: रेडियो नाटक की हर विशेषता को सुनने के अनुभव से जोड़ें; दृश्य सज्जा को उसकी विशेषता न बताएँ।

8(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
कहानी और नाटक में क्या अंतर है ? दोनों की किन्हीं तीन मुख्य विविधताओं को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी मुख्यत: पढ़ने की कथात्मक विधा है, जबकि नाटक मुख्यत: मंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुति के लिए लिखा जाता है।
- दोनों का अंतर प्रस्तुति, चरित्र और घटनाओं के उद्घाटन तथा मंचीय बंधनों के आधार पर समझा जा सकता है।

चरण 1: प्रस्तुति और अभिव्यक्ति में भेद कहानी में कथावाचक घटनाओं, परिवेश तथा पात्रों के मन की बातें विस्तार से बता सकता है। नाटक में घटना को मुख्यत: पात्रों के संवाद, अभिनय और क्रिया से सामने लाया जाता है। इसलिए नाटकीय संवाद केवल सूचना नहीं देते, बल्कि कथानक को आगे बढ़ाते और पात्रों का स्वभाव भी खोलते हैं।

चरण 2: रचना की व्यावहारिक सीमाएँ समझना कहानी समय और स्थान बदलने में अपेक्षाकृत स्वतंत्र है। नाटक में मंच पर दृश्य परिवर्तन, उपलब्ध समय और प्रस्तुति की व्यावहारिकता का ध्यान रखना पड़ता है। कहानी में लंबा वर्णन संभव है; नाटक में वही बात उपयुक्त क्रिया और संवाद द्वारा संक्षेप में साकार करनी होती है।

चरण 3: तीन अंतरों का संक्षिप्त उत्तर कहानी और नाटक में तीन मुख्य अंतर हैं। पहला, कहानी पढ़ने की कथात्मक विधा है, जबकि

नाटक अभिनय द्वारा मंच पर प्रस्तुत होता है। दूसरा, कहानी में कथावाचक वर्णन करता है; नाटक में संवाद और क्रियाएँ घटनाओं तथा चरित्रों को उभारते हैं। तीसरा, कहानी में समय और स्थान की अपेक्षाकृत स्वतंत्रता होती है, जबकि नाटक को मंचीय सीमाओं का ध्यान रखना पड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुति का माध्यम, कथन की पद्धति तथा समय और स्थान के मंचीय बंधन कहानी और नाटक के तीन प्रमुख अंतर हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीन स्पष्ट आधार रखें: पढ़ना या मंचन, वर्णन या संवाद, और समय तथा स्थान की स्वतंत्रता।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

'प्रिंट माध्यम जन संचार के अन्य माध्यमों की तुलना में सर्वाधिक विश्वसनीय है।' इस पर अपने विचार प्रकट करते हुए प्रिंट माध्यम की खूबियाँ लिखिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट माध्यम में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और अन्य मुद्रित प्रकाशन आते हैं। इसकी विश्वसनीयता का संबंध सूचना के संपादन, तथ्य-जाँच और लिखित अभिलेख से है।
- उत्तर में विश्वसनीयता का कारण बताकर स्थायित्व, पुनर्पाठ, विश्लेषण और पाठक की स्वतंत्रता जैसी खूबियों को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: कथन का आशय और उत्तर की रूपरेखा प्रश्न में प्रिंट माध्यम की खूबियों के आधार पर उसकी विश्वसनीयता पर विचार माँगा गया है। इसलिए केवल माध्यमों की सूची देना पर्याप्त नहीं है। पहले संपादकीय जाँच और उत्तरदायित्व का उल्लेख करें, फिर लिखित सामग्री को सुरक्षित रखने तथा अपनी गति से पढ़ने के लाभ जोड़ें। विश्वसनीयता को निरपेक्ष सत्य न मानें; मुद्रित सूचना की गुणवत्ता भी तथ्य-जाँच पर निर्भर करती है। लिखित सामग्री होने से किसी दावे को बाद में जाँचने और प्रकाशित सूचना का संदर्भ देने में सुविधा होती है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर प्रिंट माध्यम की विश्वसनीयता का प्रमुख आधार समाचारों का संपादन, तथ्य-जाँच और प्रकाशक की जवाबदेही है। समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ सूचना को लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं, इसलिए उसे सुरक्षित रखकर दोबारा पढ़ा और संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है। पाठक अपनी सुविधा तथा गति से सामग्री पढ़ सकता है। इनमें घटनाओं की पृष्ठभूमि, विस्तृत विश्लेषण और विविध विचारों के लिए पर्याप्त स्थान मिलता है। हालाँकि पूर्ण विश्वसनीयता तभी संभव है जब समाचार निष्पक्ष और प्रमाणित हों।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय उत्तरदायित्व, स्थायी लिखित संदर्भ, पुनर्पाठ की सुविधा और विस्तृत विश्लेषण प्रिंट माध्यम की प्रमुख खूबियाँ हैं। उसकी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए निष्पक्षता और तथ्य-जाँच आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: पहले विश्वसनीयता का आधार लिखें, फिर कम-से-कम तीन खूबियों को उनके लाभ सहित जोड़ें; केवल विशेषताओं के नाम न गिनाएँ। लिखित अभिलेख और अपनी गति से पढ़ने की सुविधा का अंतर भी स्पष्ट रखें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं ? भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता में इंटरनेट के माध्यम से समाचारों का संकलन, संपादन और प्रकाशन होता है। समाचार वेबसाइटों और डिजिटल संस्करणों में पाठ, चित्र, ध्वनि तथा वीडियो का उपयोग किया जा सकता है।

- भारत की स्थिति पर विचार देते समय प्रसार और संभावनाओं के साथ इंटरनेट की असमान पहुँच तथा सूचनाओं की प्रामाणिकता की चुनौती बतानी चाहिए।

चरण 1: परिभाषा और स्थिति को अलग-अलग समझें प्रश्न के दो पक्ष हैं। पहले स्पष्ट करें कि पत्रकारिता का प्रकाशन-माध्यम इंटरनेट है; केवल इंटरनेट पर किसी भी प्रकार की सामग्री डालना पत्रकारिता नहीं कहलाता। इसके बाद भारत में समाचार-पत्रों के ऑनलाइन संस्करण, स्वतंत्र समाचार पोर्टल तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विस्तार का उल्लेख करें। मूल्यांकन संतुलित हो: त्वरित समाचार और पाठकीय भागीदारी इसके लाभ हैं, जबकि डिजिटल विभाजन तथा अपुष्ट खबरें इसकी चुनौतियाँ हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर इंटरनेट के माध्यम से समाचारों का संकलन, संपादन और प्रकाशन इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है। इसमें पाठ के साथ चित्र, ध्वनि और वीडियो प्रस्तुत किए जा सकते हैं तथा समाचार तुरंत अद्यतन होते हैं। भारत में समाचार-पत्रों के ऑनलाइन संस्करणों और स्वतंत्र समाचार पोर्टलों के कारण इसका विस्तार हुआ है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में भी इसकी पहुँच बढ़ी है। पाठक तत्काल प्रतिक्रिया दे सकते हैं। फिर भी इंटरनेट की असमान उपलब्धता, अपुष्ट सूचनाएँ और विश्वसनीयता की समस्या इसके सामने महत्त्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता भारत में तेजी से विस्तृत होने वाला समाचार-माध्यम है। उसकी उपयोगिता तात्कालिकता, बहुमाध्यमीय प्रस्तुति और पाठकीय सहभागिता में है; प्रभावी पत्रकारिता के लिए तथ्य-जाँच और व्यापक डिजिटल पहुँच भी जरूरी हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर की शुरुआत एक स्पष्ट परिभाषा से करें; फिर भारत में विस्तार के उदाहरण और अंत में एक प्रमुख चुनौती जोड़कर दोनों पक्ष पूरे करें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए :

समाचार-पत्रों में खेलों को बहुत अधिक महत्त्व क्यों मिलता है ? स्पष्ट करते हुए, खेल पत्रकार की विशेषताएँ बताइए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खेल पत्रकारिता खेल की घटनाओं, खिलाड़ियों के प्रदर्शन, प्रतियोगिताओं और उनसे जुड़े प्रश्नों का तथ्यपूर्ण विवेचन करती है।
- उत्तर में समाचार-पत्रों में खेलों की लोकप्रियता का कारण और खेल पत्रकार की आवश्यक योग्यताएँ, दोनों स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: खेल समाचारों का महत्त्व समझें पाठक अपनी पसंद के खिलाड़ियों तथा टीमों का प्रदर्शन जानना चाहते हैं। प्रतियोगिता का रोमांच और देश का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ खेल समाचारों को व्यापक पाठक वर्ग से जोड़ती हैं। इसी जनरुचि के कारण समाचार-पत्र खेलों को पर्याप्त स्थान देते हैं। केवल परिणाम बताना पर्याप्त नहीं होता; खेल के निर्णायक क्षणों और प्रदर्शन का विश्लेषण भी पाठकों की समझ बढ़ाता है।

चरण 2: पत्रकार की योग्यताओं को प्रश्न से जोड़ें खेल पत्रकार को संबंधित खेल के नियम, तकनीक, शब्दावली, इतिहास और महत्त्वपूर्ण आँकड़ों की जानकारी होनी चाहिए। उसे खिलाड़ियों की खूबियों और कमियों को समझकर निष्पक्ष विश्लेषण करना चाहिए। रिपोर्ट में गति और रोचकता बनी रहे, किंतु उत्साह में तथ्य न बदलें। इसलिए सूक्ष्म अवलोकन, विश्वसनीय जानकारी और सहज भाषा उसकी आवश्यक विशेषताएँ हैं।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर खेलों में युवाओं सहित व्यापक जनसमुदाय की रुचि होती है। प्रतियोगिता का रोमांच, खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ तथा राष्ट्रीय गौरव की भावना पाठकों को आकर्षित करती हैं। इसलिए समाचार-पत्र खेल समाचारों को विशेष महत्त्व देते हैं। खेल पत्रकार को खेल के नियमों, तकनीक, इतिहास और आँकड़ों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। वह सूक्ष्म पर्यवेक्षक, निष्पक्ष विश्लेषक तथा भाषा पर अधिकार रखने वाला हो। उसे रोचक शैली में खेल की गति, निर्णायक क्षणों और खिलाड़ियों के प्रदर्शन का सटीक चित्र प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष खेलों की व्यापक लोकप्रियता उन्हें समाचार-पत्रों में प्रमुख स्थान दिलाती है; योग्य खेल पत्रकार ज्ञान, निष्पक्षता और रोचक प्रस्तुति से इस जनरुचि को सार्थक जानकारी देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में खेलों की लोकप्रियता के कारण और दूसरे भाग में पत्रकार के ज्ञान, निष्पक्षता तथा भाषा की विशेषताएँ लिखें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'बात सीधी थी पर' कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहता है, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' कथ्य और भाषा के संबंध को स्पष्ट करती है।
- कविता का केंद्रीय संदेश है कि भाषा भाव की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम हो; अनावश्यक जटिलता अर्थ को उलझा देती है।

चरण 1: कविता की स्थिति समझें कवि के पास कहने के लिए एक सीधी बात थी, लेकिन उसे प्रभावशाली बनाने के प्रयास में भाषा के साथ अत्यधिक छेड़छाड़ हुई। फलतः बात स्पष्ट होने के स्थान पर उलझती गई। कविता में पेंच और चूड़ी का बिंब बताता है कि अनुचित जोर लगाने से अभिव्यक्ति का स्वाभाविक संबंध टूट जाता है। यह बिंब सहज बात को कठिन शब्दों से सजाने की प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाता है।

चरण 2: संदेश को अभिव्यक्ति से जोड़ें यहाँ सरलता का अर्थ विचार की कमी नहीं है। कवि चाहता है कि शब्द कथ्य की आवश्यकता के अनुरूप चुने जाएँ। जब रचनाकार भाषा के चमत्कार को ही लक्ष्य बना लेता है, तब मूल बात दब जाती है। इसलिए भाव को स्पष्ट रखकर भाषा को उसके अनुरूप ढालना चाहिए। कविता रचनात्मक धैर्य और सहज संप्रेषण की आवश्यकता बताती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर कवि संदेश देता है कि भाव और भाषा में सहज सामंजस्य होना चाहिए। सीधी बात को अनावश्यक शब्दाडंबर और बनावटी भाषा से जटिल बनाने पर उसका अर्थ तथा प्रभाव नष्ट हो जाता है। भाषा पर जोर आजमाने के बजाय उसे भाव के अनुकूल रखना चाहिए। अच्छी अभिव्यक्ति वही है, जो सरलता और स्वाभाविकता से बात को पाठक तक पहुँचा दे।

चरण 4: निष्कर्ष कविता सरल, सहज और संप्रेषणीय भाषा का समर्थन करती है, जिससे कथ्य का मूल अर्थ सुरक्षित रहे।

त्वरित सुझाव: संदेश लिखते समय सीधी बात, कृत्रिम भाषाई उलझाव और सहज संप्रेषण के बीच संबंध स्पष्ट करें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'पतंग' कविता में कवि एक ओर तो कपास से बच्चों का संबंध जोड़ते हैं, और दूसरी ओर उन्हें सूरज के सामने भी निडरता से खड़ा कर देते हैं। कपास और सूरज के साथ उनके इस संबंध का आधार स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलोक धन्वा की कविता 'पतंग' बालमन के उत्साह, कोमलता, कल्पनाशीलता और साहस का चित्र प्रस्तुत करती है।
- कपास बच्चों की हल्की, कोमल देह से जुड़ी है, जबकि सूरज के सामने खड़े होना उनके निडर और ऊर्जावान मन को व्यक्त करता है।

चरण 1: कपास के संबंध का आधार समझें बच्चों की देह को कपास की तरह हल्का और कोमल बताना उनकी सहज गति तथा उल्लास को उभारता है। पतंग उड़ाते समय वे तेजी से दौड़ते और उछलते हैं। ऐसा लगता है मानो धरती का गुरुत्व उन्हें रोक नहीं पा रहा। यहाँ तुलना का आशय दुर्बलता नहीं, बल्कि बालसुलभ हल्केपन और निर्बाध गतिविधि से है।

चरण 2: सूरज के संबंध का आधार समझें बच्चों का मन साहस और रोमांच से भरपूर है। पतंग उड़ाने की तन्मयता में ऊँचाई और खतरे का भय पीछे छूट जाता है। सूरज के सामने निडर खड़ा होना इसी प्रबल आत्मविश्वास का काव्यात्मक चित्र है। कोमल देह और निर्भय मन एक ही बालजीवन के दो पक्ष हैं, इसलिए दोनों चित्र परस्पर विरोधी नहीं हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर कपास से बच्चों का संबंध उनकी कोमल, हल्की देह और चंचल गति के कारण है। पतंग उड़ाते समय वे इतने उल्लसित होते हैं कि धरती का गुरुत्व भी उन्हें रोक नहीं पाता। सूरज के सामने निडर खड़ा होना उनके साहस, उत्साह और आत्मविश्वास का प्रतीक है। इस प्रकार कवि बच्चों की शारीरिक कोमलता तथा मानसिक निर्भीकता को साथ उभारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कपास बच्चों के हल्केपन और कोमलता का, तथा सूरज के सामने खड़ा होना उनकी निर्भय ऊर्जा का बिंब है।

त्वरित सुझाव: कपास को केवल कमजोरी न मानें; उससे देह का हल्कापन जोड़ें और सूरज से बच्चों के निडर मन का संबंध स्पष्ट करें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'आत्मपरिचय' कविता से ली गई पंक्ति – 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' विरोधाभास से भरी हुई है, इस विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विरोधाभास में ऊपर से परस्पर विरोधी लगने वाले कथनों में गहरा भावगत सामंजस्य होता है।
- इस पंक्ति में शीतल वाणी अभिव्यक्ति की कोमलता है और आग हृदय की व्यथा तथा सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह का संकेत है।

चरण 1: शब्दों के सामान्य अर्थ समझें शीतलता का अर्थ ठंडक और आग का अर्थ दाह है। सामान्य दृष्टि से दोनों साथ नहीं हो सकते, इसलिए शीतल वाणी में आग रखने की बात विरोधपूर्ण प्रतीत होती है। किंतु कवि बाहरी तापमान का वर्णन नहीं करता; वह अपनी वाणी और अपने अंतर्मन की अलग-अलग विशेषताएँ बताता है।

चरण 2: अंतर्निहित भावों का संबंध स्पष्ट करें कवि का अंतर्मन वेदना और तीव्र भावनाओं से भरा है। उसमें सामाजिक रूढ़ियों, विषमता और अन्याय के प्रति विद्रोह तथा आक्रोश भी है। यही भीतर की आग है। उसकी अभिव्यक्ति फिर भी मधुर, सहज और शांत है। इस प्रकार अनुभव की तीव्रता तथा कथन की कोमलता साथ रहती हैं। वाणी की शीतलता से यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि कवि पीड़ारहित है। इससे उसके व्यक्तित्व की संवेदनशीलता प्रकट होती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का उत्तर शीतलता और आग सामान्यतः परस्पर विरोधी हैं, इसलिए पंक्ति में विरोधाभास दिखाई देता है। वास्तव में कवि की वाणी मधुर, शांत और कोमल है, पर उसके भीतर वेदना तथा रूढ़ियों, विषमता और अन्याय के प्रति विद्रोह की आग जलती है। वह अपनी तीव्र अनुभूतियों को उग्र शब्दों में नहीं, सहज तथा शीतल वाणी में व्यक्त करता है। यही बाहरी शांति और भीतरी ताप का सामंजस्य है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति का विरोधाभास वाणी की शीतल अभिव्यक्ति और हृदय की वेदना और विद्रोह की आग के एक साथ उपस्थित होने में है।

त्वरित सुझाव: शीतल को कथन-शैली से और आग को अंतर्मन की अनुभूति से जोड़कर विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से ली गई पंक्ति – 'हम समर्थ शक्तिमान एक दुर्बल को लाएँगे' से वर्तमान टी.वी. पत्रकारिता के किस रूप का पता चलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता शक्तिशाली संचार माध्यम और असहाय व्यक्ति के बीच असमान संबंध पर व्यंग्य करती है।
- दुःख के प्रति सहानुभूति तथा दुःख को दर्शनीय सामग्री बनाने में अंतर है।

चरण 1: शक्ति और दुर्बलता का संबंध हम समर्थ शक्तिमान में कार्यक्रम बनाने वाले का सत्ता-बोध और अहंकार व्यक्त होता है। एक दुर्बल को लाने का विचार अपाहिज को समान गरिमा वाले मनुष्य के स्थान पर कार्यक्रम की सामग्री मानता है। यहाँ सहायता करने की अपेक्षा उस पर अपना नियंत्रण स्थापित करने की प्रवृत्ति प्रधान है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर इस पंक्ति से टी.वी. पत्रकारिता का अहंकारी, संवेदनहीन और व्यावसायिक रूप उजागर होता है। शक्तिशाली मीडियाकर्मी दुर्बल व्यक्ति की पीड़ा को सहायता का विषय बनाने के बजाय प्रदर्शन की वस्तु बनाते हैं। उनकी प्राथमिकता मानवीय गरिमा से अधिक कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष यह पंक्ति दुर्बल की पीड़ा के प्रदर्शन पर आधारित पत्रकारिता और मीडिया के शक्ति-अहंकार पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: समर्थ और दुर्बल के विरोध से शुरुआत कीजिए और उसे पीड़ा के प्रदर्शन तथा मानवीय गरिमा से जोड़िए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

सूर्योदय से उषा की जादुई शक्ति का प्रभाव कैसे टूटता दिखाई दे रहा है ? 'उषा' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा कविता में प्रभात के बदलते रंगों और प्रकाश का बिंबात्मक चित्रण है।
- उषा का जादू अँधेरे से प्रकाश की ओर बढ़ती प्रकृति की क्षण-क्षण बदलती सुंदरता है।

चरण 1: जादू का संदर्भ पहचानें प्रभात के आकाश में नीले शंख, राख से लीपे चौके और लाल केसर जैसे रंग-बिंब क्रमशः उभरते हैं। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब इस सौंदर्य को और सजीव बनाता है। ये दृश्य स्थिर नहीं हैं; बढ़ते प्रकाश में उनका रूप लगातार बदलता रहता है। कवि इसी क्षणिक और मनोहारी दृश्य को उषा का जादू कहता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर उषा में आकाश के नीले, धूसर और लाल रंगों का परिवर्तन जादुई सौंदर्य रचता है। सूर्योदय के साथ प्रकाश फैलने पर ये धुँधले, रहस्यमय रंग और झिलमिलाते बिंब मिटने लगते हैं। प्रकृति स्पष्ट दिखने लगती है, इसलिए उषा का जादू टूट जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सूर्योदय का स्पष्ट प्रकाश उषाकालीन रंगों और रहस्यपूर्ण बिंबों को विलीन कर देता है; यही जादू का टूटना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बदलते रंगों का जादू बताइए, फिर सूर्यप्रकाश में उस दृश्य के लुप्त होने का कारण दीजिए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

तुलसीदास जी के युग और वर्तमान युग की बेकारी के कारणों में कौन-कौन सी समानताएँ हैं ? 'कवितावली' से उद्धृत छंदों के आधार पर लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में तुलसीदास ने किसान, व्यापारी और चाकर सहित समाज के विभिन्न वर्गों की आजीविका का संकट दिखाया है।
- दो युगों की तुलना में समान सामाजिक प्रवृत्तियाँ पहचाननी चाहिए; आधुनिक कारणों को सीधे प्राचीन पाठ में आरोपित नहीं करना चाहिए।

चरण 1: पाठ में बेकारी का आधार देखें खेती न किसान को तथा चाकर को चाकरी जैसे उल्लेख बताते हैं कि अपने परंपरागत व्यवसाय से भी लोगों को निर्वाह के साधन नहीं मिल रहे थे। व्यापारी के लिए व्यापार और भिखारी के लिए भीख तक का अभाव व्यापक आर्थिक संकट को व्यक्त करता है। इसलिए समस्या केवल व्यक्ति के परिश्रम की कमी नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर तुलसीदास के युग और वर्तमान में आजीविका के पर्याप्त अवसरों का अभाव, गरीबी, आर्थिक असमानता और शोषण बेकारी के समान कारण हैं। कवितावली में किसान को खेती और चाकर को चाकरी नहीं मिलती; आज भी अनेक लोगों को श्रम के अनुरूप काम तथा आय नहीं मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों युगों में अवसरों की कमी, आर्थिक विषमता और शोषण से सामान्य जन की जीविका संकटग्रस्त होती है।

त्वरित सुझाव: खेती न किसान को और चाकर को चाकरी के संदर्भ से तुलना कीजिए; तकनीकी कारणों को पुराने युग पर मत थोपिए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

महादेवी वर्मा ने भक्तिन के जीवन का दूसरा परिच्छेद किसे कहा है और उस परिच्छेद में भक्तिन का अनुभव कैसा रहा ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के जीवन-वृत्त में दूसरा परिच्छेद उसके विवाह के बाद के पारिवारिक जीवन से संबंधित है।
- इस प्रसंग में पुत्रियों की माँ के प्रति भेदभाव और संयुक्त परिवार में श्रम के असमान बँटवारे का चित्रण है।

चरण 1: दूसरे परिच्छेद की पहचान महादेवी वर्मा ने भक्तिन के विवाह के बाद के जीवन को दूसरा परिच्छेद कहा है। इससे उसका बाल्यकाल समाप्त होकर ससुराल के पारिवारिक दायित्वों का दौर आरंभ होता है। प्रश्न का उत्तर देते समय इसी वैवाहिक चरण का उल्लेख आवश्यक है; इसे लेखिका के यहाँ नौकरी करने के समय से नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 2: उस चरण का अनुभव समझें भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया। पुत्रियों की माँ होने के कारण सास और जिठानियों से उसे उपेक्षा तथा तिरस्कार मिला। पुत्रों वाली जिठानियों का सम्मान था, जबकि भक्तिन और उसकी बेटियों पर अधिक श्रम का बोझ पड़ता था। भोजन और सुविधाओं में भी भेदभाव था। इस अनुभव में स्त्री-विरोधी सामाजिक मान्यताओं और पुत्र-पक्षपात का प्रभाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों का उत्तर महादेवी वर्मा ने भक्तिन के विवाहोपरांत जीवन को उसका दूसरा परिच्छेद कहा है। इस चरण में उसका अनुभव कष्टपूर्ण रहा। तीन बेटियों को जन्म देने के कारण सास और जिठानियाँ उसे उपेक्षा तथा तिरस्कार की दृष्टि से देखती थीं। वह और उसकी बेटियाँ कठिन परिश्रम करतीं, फिर भी भोजन और सुविधाओं में भेदभाव सहती थीं। इस प्रकार उसका वैवाहिक जीवन पारिवारिक विषमता से भरा था।

चरण 4: निष्कर्ष दूसरा परिच्छेद भक्तिन का विवाहोपरांत जीवन है, जिसमें पुत्रियों की माँ होने के कारण उसे श्रम, तिरस्कार और भेदभाव सहना पड़ा।

त्वरित सुझाव: पहले वैवाहिक जीवन को दूसरा परिच्छेद बताइए, फिर तीन पुत्रियों से जुड़े भेदभाव और श्रम का उल्लेख कीजिए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से गर्वित लोगों का बाज़ार पर क्या प्रभाव पड़ता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सार्थकता आवश्यक वस्तुओं के उचित आदान-प्रदान में है; केवल क्रयशक्ति का प्रदर्शन उसे इस उद्देश्य से दूर करता है।
- जैनेंद्र के अनुसार धन का गर्व रखने वाला ग्राहक अपनी वास्तविक जरूरत के बजाय खरीद सकने की शक्ति को महत्त्व देता है।

चरण 1: प्रसंग और प्रभाव समझिए यहाँ पर्चेजिंग पावर का अर्थ खरीदने की क्षमता है। उससे गर्वित व्यक्ति के पास धन तो होता है, पर उसे अपनी जरूरत का स्पष्ट बोध नहीं होता। वह बाज़ार के आकर्षण से प्रभावित होकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीदता है। ऐसे ग्राहक की दुर्बलता का लाभ उठाकर विक्रेता उसे फँसाने की चेष्टा करता है। इससे ग्राहक और विक्रेता का संबंध सहयोग के स्थान पर छल तथा लाभ की होड़ में बदल जाता है। लेखक के लिए बाज़ार का उचित उपयोग करने वाला वह है जो अपनी आवश्यकताओं को पहचानता है और आकर्षण देखकर विवेक नहीं खोता।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर से गर्वित लोग अपनी जरूरत पहचानकर नहीं, धन और खरीदने की क्षमता दिखाने के लिए खरीदारी करते हैं। वे बाज़ार को सार्थकता नहीं देते, केवल उसका बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। ऐसे ग्राहकों से छल-कपट और शोषण को प्रोत्साहन मिलता है। फलतः बाज़ार का सद्भाव नष्ट होता है और ग्राहक-विक्रेता के बीच विश्वास के स्थान पर एक-दूसरे को ठगने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रयशक्ति का अहंकार बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाकर उसके सद्भाव और उपयोगिता को नष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जरूरत के बोध, अनावश्यक खरीदारी और बाज़ारूपन बढ़ने का परस्पर संबंध स्पष्ट करें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक ने किन अंधविश्वासों की ओर संकेत किया है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में वर्षा के लिए किए जाने वाले लोकअनुष्ठान और लेखक की तार्किक आपत्ति साथ-साथ उभरते हैं।
- अंधविश्वास बताने के लिए उसी अनुष्ठान का उल्लेख करें जिसका वर्णन पाठ में है; असंबद्ध उदाहरण न जोड़ें।

चरण 1: पाठ में वर्णित विश्वास पहचानिए इंदर सेना के लड़के वर्षा की कामना करते हुए घर-घर जाते हैं। लोग उन पर पानी उड़ेलते हैं और उन्हें अनाज देते हैं। इस व्यवहार के पीछे इंद्र को प्रसन्न कर वर्षा कराने का विश्वास है। लेखक को आपत्ति है कि जब पानी की इतनी कमी है, तब पीने योग्य पानी को इस प्रकार बहाना तर्कसंगत नहीं है। जीजी इस परंपरा को त्याग और दान के भाव से देखती हैं; उत्तर में इन दोनों दृष्टियों का प्रसंग समझना उपयोगी है। लेखक बचपन में आर्यसमाजी विचारों के प्रभाव से ऐसे व्यवहार पर प्रश्न करता है। वह मानता है कि वर्षा के अभाव में उपलब्ध जल को बचाना चाहिए, उसे वर्षा बुलाने के लिए बहाना उचित नहीं है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने अकाल और सूखे के समय इंद्र को प्रसन्न करके वर्षा कराने के अंधविश्वास की ओर संकेत किया है। इंदर सेना के लड़के घर-घर जाकर पानी माँगते हैं। लोग उन पर पानी उड़ेलते और अनाज देते हैं। विश्वास है कि इससे इंद्र प्रसन्न होकर वर्षा करेंगे। लेखक पानी की कमी में इस तरह पानी बहाने को व्यर्थ और अतार्किक मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष इंदर सेना पर पानी उड़ेलकर इंद्र को प्रसन्न करने और वर्षा कराने की धारणा पाठ का प्रमुख अंधविश्वास है।

त्वरित सुझाव: इंदर सेना, पानी उड़ेलना और इंद्र को प्रसन्न करने का विश्वास लिखकर लेखक की तार्किक आपत्ति जोड़ें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती थी, कैसे। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेणु की कहानी में ढोलक की आवाज़ निराश ग्रामीणों के लिए साहस और जीवट का प्रतीक है।
- रात्रि की विभीषिका का संबंध महामारी, मृत्यु, सन्नाटे और भय से है।

चरण 1: विभीषिका और चुनौती का संबंध समझिए गाँव महामारी से पीड़ित है। रात के अंधकार में मृत्यु का भय और गहरा हो जाता है। कराहों और सन्नाटे के बीच लोग अपने को असहाय अनुभव करते हैं। ऐसे वातावरण में लुट्टन पहलवान की ढोलक लगातार बजती है। उसका स्वर भय के सामने हार स्वीकार नहीं करता। वह लोगों के भीतर थोड़ी देर के लिए ही सही, साहस और जीने की इच्छा जगाता है। इसीलिए ढोलक की ललकार को विभीषिका की चुनौती कहा गया है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से त्रस्त गाँव में रात का सन्नाटा, कराहें और मृत्यु का भय लोगों को आतंकित करते थे। ऐसे समय पहलवान की ढोलक निर्भय होकर गूँजती थी। उसकी आवाज़ ग्रामीणों में साहस और जीवन के प्रति आशा जगाकर रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक की निर्भय गूँज भयभीत ग्रामीणों में जीवन और संघर्ष का भरोसा बनाए रखती थी।

त्वरित सुझाव: पहले महामारी से उपजे भय का उल्लेख करें, फिर ढोलक से मिलने वाले साहस को उससे जोड़ें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
शिरीष का फूल अपने जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार किस प्रकार करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की कोमलता के साथ उसकी कठिन ऋतु सहने की क्षमता को समझना आवश्यक है।
- फूल का खिलना जीवन की अजेयता, अनासक्ति और विपत्ति में प्रसन्न रहने का प्रतीक है।

चरण 1: शिरीष के स्वभाव का आशय समझिए ग्रीष्म की भीषण गर्मी और लू वातावरण को कठोर बना देती हैं। शिरीष इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने कोमल फूलों के साथ खिला रहता है। उसकी यह प्रसन्नता परिस्थितियों के अनुकूल होने पर निर्भर नहीं करती। लेखक इस सहज मस्ती में जीवन की अपराजेय शक्ति देखता है। शिरीष अपने आचरण से सिखाता है कि विपत्ति में संतुलन और उल्लास बनाए रखना भी संघर्ष का रूप है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर शिरीष का फूल भीषण गर्मी और लू के बीच भी खिलकर हँसता रहता है। वह विपरीत परिस्थितियों से हारकर उदास नहीं होता। अपनी मस्ती, कोमलता और प्रसन्नता बनाए रखकर वह संदेश देता है कि कठिनाइयों में भी जीवन का उल्लास अजेय रह सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष प्रतिकूल मौसम में भी खिलकर प्रसन्न रहने के अपने व्यवहार से जीवन की अजेयता का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: गर्मी और लू की प्रतिकूलता के साथ शिरीष की मस्ती जोड़ें; केवल फूल की सुंदरता न लिखें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
आदर्श समाज की संकल्पना के बारे में डॉ. आंबेडकर के क्या विचार हैं ? उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर के आदर्श समाज की नींव स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व है।
- समाज में गतिशीलता तथा विभिन्न समूहों के बीच हितों का आदान-प्रदान सामाजिक लोकतंत्र को सुदृढ़ करता है।

चरण 1: आदर्श समाज के आधार समझिए आंबेडकर ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जिसमें जन्म या जाति व्यक्ति का स्थान और कार्य निर्धारित न करे। प्रत्येक व्यक्ति को क्षमता विकसित करने का अवसर मिले। समाज के किसी हिस्से में होने वाले उपयोगी परिवर्तन का लाभ दूसरे हिस्सों तक भी पहुँचे। इसके लिए विविध समूहों के बीच संपर्क और साझा हित आवश्यक हैं। भ्रातृत्व इसी सामाजिक सहभागिता का आधार है और लोकतंत्र को दैनिक व्यवहार में अर्थ देता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर डॉ. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है। उसमें जातिगत बंधन नहीं, सभी को विकास के अवसर मिलते हैं। समाज गतिशील रहता है और विभिन्न वर्गों में संपर्क तथा हितों का आदान-प्रदान होता है। सब परस्पर सम्मान और भाईचारे से रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आदर्श समाज में समान अवसर, स्वतंत्रता, सामाजिक गतिशीलता और परस्पर भाईचारे का समन्वय होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व के साथ समूहों में संपर्क तथा परिवर्तन के प्रसार का उल्लेख करें।